राजस्थान विधान सभा

द्वितीय बैठक, मङ्गलवार, दिनांक ६ मार्च, सन् १९५६ ई०

विधान सभा की बैठक प्रातः ८ बज कर ४५ मिनट पर प्रारम्भ हुई।

(श्री नरोत्तमलाल जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री ज्ञानचन्द एवं श्री भैरवलाल कालाबादल द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अध्यक्ष—वे सदस्य जिन्होंने अभी तक संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ अथवा ज्ञान ग्रहण नहीं किया हो, अब ऐसा करेंगे।

श्री सचिव (श्री मनसाराम पुरोहित)—श्री ज्ञानचन्द मोदी।

(करतलध्वनि)

श्री ज्ञानचन्द मोदी—मैं, ज्ञानचन्द मोदी, जो विधान सभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुआ हूँ, ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा तथा जिस पद को मैं ग्रहण करने वाला हूँ उसके कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करूंगा।

(शपथ लेने के पश्चात् करतल ध्वनि)

श्री सचिव (श्री मनसाराम पुरोहित)—श्री भैरवलाल कालाबादल।

(करतलध्वनि)

श्री भैरवलाल कालाबादल—मैं, भैरवलाल कालाबादल, जो विधान सभा के लिए निर्वाचित हुआ हूँ, ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा तथा जिस पद को मैं ग्रहण करने वाला हूँ उसके कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करूंगा।

(शपथ लेने के पश्चात् करतलध्वनि)

तारांकित प्रश्नोत्तर

प्रश्न संख्या १

भूतपूर्व ठिकाना सीकर, खेतड़ी व उनियारा के कर्मचारियों को राजस्थान निर्माण के पश्चात् शासकीय सेवाओं में लेना

श्री सरदारसिंह—क्या मुख्य मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

[श्री सरदारसिंह]

(क) सीकर, खेतड़ी और उनियारा के भूतपूर्व ठिकानों के प्रति कितने कर्मचारी राजस्थान बनने के बाद विभिन्न विभागों में सरकारी सेवाओं में लिए गए ?

(ख) क्या यही सही है कि इन ठिकानों के न्याय विभाग की सेवाओं को भूतपूर्व जयपुर राज्य की न्याय विभाग की सेवाओं के समकक्ष मान कर उनमें सम्मिलित (इन्टीग्रेट) किया गया था ?

(ग) यदि हां, तो इन ठिकानों के अन्य कर्मचारियों को भी उपरोक्त सुविधायें दी गई हैं ?

(घ) यदि नहीं, तो क्या सरकार इन ठिकानों के सभी कर्मचारियों को न्यायोचित वेतन व अन्य सुविधायें देने पर विचार करेगी ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मन्त्री)—(क) सीकर २६५, खेतड़ी ६५ और उनियारा ७१ के, ४०१ कर्मचारी राज्य सेवा में लिए गये और ११ तहसीलदार व नायब तहसीलदार लिये गये ।

(ख) जी हां ।

(ग) जी नहीं ।

(घ) जागीर पुनर्ग्रहण एक्ट के अन्तर्गत जितनी जागीर खालसा हुई हैं उनके कर्मचारियों को राज्य सेवा में लिये जाने के नियम एक ही हैं, उनमें संशोधन की आवश्यकता नहीं ।

श्री सरदारसिंह—इनका इन्टीग्रेशन कौनसी तारीख को किया गया ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—जिस डिपार्टमेंट में इनको लिया गया उनके इन्टीग्रेशन के साथ इनका भी इन्टीग्रेशन किया है ।

श्री भैरोंसिंह—पुलिस कर्मचारी और मेडिकल डिपार्टमेंट के कर्मचारियों की सरविस के शुमार करने में कोई अन्तर रखा गया है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—कोई अन्तर नहीं रखा जा सकता, नियमों के अनुकूल ही कार्यवाही की गई होगी । अगर किसी प्रकार की कोई बात हुई है तो नोटिस में लाये जाने पर कार्यवाही की जा सकती है ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—इस प्रकार के कर्मचारियों की सरविस वास्तव में कितनी है, सर्टिफाइड सरविस कितनी है; इनके बारे में जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की गई है क्या ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—जी हां, ठिकाने के रेकॉर्ड से उनकी सरविस को वेरीफाई किया गया है ।

Page No 3

श्री भैरोंसिंह—क्या यह सही है कि सीकर, खेतड़ी और उनियारा ठिकाने में जो लोग पुलिस की सरविस में जिस तारीख से थे उनको उस दिन से शुमार किया गया और मेडिकल विभाग के कर्मचारियों को जिस दिन से ठिकाना रिजम्पशन हुआ उनकी सरविस उस दिन से शुमार की गई ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—मेरी जानकारी में यह बात नहीं है, आपने जो सूचना दी उसके बारे में जानकारी प्राप्त करूंगा।

प्रश्न संख्या २

अनट्रेन्ड अध्यापकों को ट्रेन्ड अध्यापकों के ग्रेड देना विशेषतया किशनगढ़ में

श्री चांदमल मेहता—क्या शिक्षा मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) अनट्रेन्ड अध्यापकों को ट्रेंड अध्यापकों की ग्रेड देने के लिये कब सरक्यूलर जारी किया गया और क्या क्राइटेरिया निश्चित किया गया ?

(ख) किशनगढ़ सब डिविजन के किन किन अनट्रेन्ड अध्यापकों ने ट्रेन्ड अध्यापकों की ग्रेड के लिये कब कब आवेदन-पत्र दिये व उन पर क्या कार्यवाही की गई ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—(क) दिनांक ११-३-५४ को। फिक्सेशन किया जा रहा है उसमें २५ प्रतिशत अनट्रेन्ड अध्यापकों को ट्रेन्ड का ग्रेड दिया जायगा।

(ख) ऐसा कोई आवेदन पत्र नहीं प्राप्त हुआ। अतः प्रश्न नहीं उठता।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि इस सम्बन्ध में कई आवेदन-पत्र प्राप्त हुए और वे अभी तक सरकार के विचाराधीन हैं ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—आपको जो अभी बताया गया है वह सब जानकारी प्राप्त करके बताया गया है, ऐसे किसी आवेदन पत्र की जानकारी नहीं हैं।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि नित्यानन्द कानूगो वरनाक्युलर मिडिल स्कूल के अध्यापक ने एक आवेदन पत्र पेश किया था ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—यह आप जानकारी दे रहे हैं, मैं इस बारे में जानकारी हासिल करूंगी कि इस प्रकार का आवेदन पत्र आया या नहीं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या उस सर्कुलर में यह उल्लेख था कि आवेदन-पत्र आने के बाद ही प्रोमोशन दिया जायगा या विभागीय जांच करके ही प्रोमोशन का निर्णय ले लिया जायगा ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—फिक्सेशन हो जाने के बाद ही तो यह तय होगा।

Page No 4

श्री हरिकृष्ण व्यास—मेरा प्रश्न यह है जिस सर्कुलर का अभी उल्लेख किया गया है क्या उसमें यह उल्लेख है कि आवेदन पत्र आने के बाद ही प्रोमोशन दिया जायगा या विभागीय जाँच करके ५० प्रतिशत का प्रोमोशन दे दिया जायगा; सर्कुलर में क्या है ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—सर्कुलर में आवेदन पत्र का कोई जिक्र नहीं। सदस्य महोदय ने जो प्रश्न पूछा था उसका जवाब दे दिया गया है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि जब कि सर्कुलर में आवेदन पत्र का कोई जिक्र नहीं तो आवेदन पत्र के न आने की स्थिति में उनका फिक्सेशन का कार्य अब तक पूरा क्यों नहीं हुआ ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—अभी तक सब का फिक्सेशन विचाराधीन है, किसी का भी फिक्सेशन इसके अन्तर्गत नहीं हुआ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या यह सही है कि इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स ने इस सिलसिले में अपना प्रस्ताव लगभग साल भर पहले भेज दिया था, अभी तक उस पर कोई निर्णय नहीं हो पाया है ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—सरकुलर को निकले हुये तीन साल हो गये हैं। सालभर पहले रिकमन्डेशन्स हो सकती है किन्तु जब तक फिक्शेशन नहीं हो जाता, उससे कोई मतलब नहीं ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—सालभर के अन्दर अन्दर कितने इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स की इस बारे में रिपोर्ट आई है ?

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—इसकी मेरे पास लिस्ट नहीं है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या डिपुटी डाईरेक्टर आफ स्कूल्स के दफ्तर में सारे के सारे रेकार्ड, रजिस्टर में मौजूद है....

श्री अध्यक्ष—This is giving information.

श्री हरिकृष्ण व्यास—I am seeking confirmation. May be that my information may be untrue. So I am seeking confirmation, whether it is true that the office of the Deputy Director has got all these records, and in some cases there are orders in existence in the department fixing some people, but postings have not taken place.

श्रीमती कमलाकुमारी बेनीवाल—जहां तक रेकार्ड का सवाल है सभी रेकार्ड हैं। जहां तक किसी पर्टीकुलर के एप्लीकेशन के ऑर्डर का सवाल है तो आप किसी पर्टीकुलर केस को बताइये तो उसकी जानकारी करके बताया जा सकता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—मेरा यह कहना है कि फिक्सेशन के ऑर्डर तो हो चुके हैं किन्तु उनका पोस्टिंग न करने की वजह से उस ऑर्डर को रद्दी की टोकरी में डालने का प्रयत्न किया गया है ?

श्री मोहनलाल सुखाडिया—अध्यक्ष महोदय, मै जरा इस बात को स्पष्ट करदूं जैसा कि (क) भाग का उत्तर दिया गया है उसके अनुसार २५ प्रतिशत को जो प्रोमोशन देने की बात कही गई है वह तभी संभव हो सकती है जब कि इन्टीग्रेशन पूरा का पूरा कम्पलीट हो जाय, उसके बिना यह सम्भव नहीं कि किन २५ को प्रोमोशन दिया जाय इस वजह से यह रुका हुआ है ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—मेरा यह कहना है कि दिक्कत फिक्सेशन की नहीं है। फिक्सेशन केतो ऑर्डर्स हो चुके हैं लेकिन पोस्टिंग न होने की वजह से उस ऑर्डर का इम्पलीमेन्टेशन नहीं किया जा रहा है ।

श्री अध्यक्ष—यह तो आप सूचना दे रहे हैं ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जिस सरकुलर का अभी उल्लेख किया गया, क्या उसके अनुसार यह निर्णय लिया गया ? यह निर्णय कब लिया गया ?

(घंटी)

श्री हरिकृष्ण व्यास—यह तो बहुत अन्याय हो रहा है ।

प्रश्न संख्या ३

वर्तमान वर्ष में तकावी ऋण की रकम की स्वीकृति का आधार एवं उसका विभिन्न तहसीलों में वितरण

श्री **सरदारसिंह**—क्या राजस्व मंत्री निम्न लिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) राजस्थान में चालू वर्ष में तकावी ऋण के लिये कितनी रकम सरकार द्वारा स्वीकृत की गई थी ?

(ख) उपरोक्त रकम किस आधार पर किस किस तहसील को दी गई है ?

(ग) क्या तकावी वितरण करने के लिये प्रत्येक तहसील के लिये किसी एडवाइज़री कमेटी का निर्माण किया गया है ?

(घ) यदि हां, तो क्या स्थानीय एम० एल० ए० को उक्त कमेटी का सदस्य बनाना आवश्यक माना गया है ?

(ङ) दूनी तहसील की वितरण कमेटी के कौन कौन सदस्य हैं ?

Page No 6

श्री दामोदरलाल व्यास—माननीय अध्यक्ष, इस प्रश्न में तमाम तहसीलों की सूचना चाही गई है इसलिये अभी तक मुकम्मिल सूचना प्राप्त नहीं हुई है, अत: मेरी प्रार्थना है कि इसको मेरे अगली टर्न पर रख दिया जाय।

श्री जसवंतसिंह—जितनी भी सूचना आपको मिली है वही दे दीजिये।

श्री दामोदर लाल व्यास—अभीतक मुकम्मिल सूचना प्राप्त नहीं हुई है। अध्यक्ष महोदय, यदि आपकी आज्ञा हो तो जितनी सूचना प्राप्त हुई है वही पढ़ दूं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—इस सिलसिले में मुझे कुछ अर्ज करना है माननीय अध्यक्ष, अपने रूल्स में....

श्री अध्यक्ष—This is the first day .

श्री हरिकृष्ण व्यास—As far as the Revenue Minister is concerned, Sir, it is probably the (अश्रव्य) day. That is why it is a provocation for me to make a submission.

श्री अध्यक्ष—इनकम्पलीट इनफोरमेशन है, वही दे दीजिये।

श्री सरदारसिंह—What is the use of incomplete information ?

श्री दामोदरलाल व्यास (राजस्व मंत्री)—He has required information for all the Tehsils. I have not received Complete information.

श्री मानसिंह महार—दूनी तहसील के नाम तो बता दीजिये।

कु० श्री जसवन्तसिंह—There are so many Tehsils. Surely Government has got...

श्री दामोदरलाल व्यास—I said I have got the information and I can give the information for many Tehsils, but for a few I do not have.

श्री जसवन्तसिंह—Our objection is, why complete information is not available. You have been given 15 days' notice.

श्री अध्यक्ष—They will try to be more quicker.

प्रश्न संख्या ४

राजस्थान में बाहर से लोन पर आये गजटेड ऑफिसर्स की योग्यतायें इत्यादि

श्री चांदमल मेहता—क्या मुख्य मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) राजस्थान में ऐसे कितने गजटेड ऑफिसर्स हैं जो लोन सर्विस पर आये हैं ?

(ख) उक्त ऑफिसर्स के नाम व योग्यताएं क्या हैं तथा वे किस किस स्थान पर काम कर रहे हैं और कितने समय के लिये लोन पर लिये गये हैं ?

श्री मोहनलाल सुखाडिया मुख्य मन्त्री—(क) ८।

(ख) आवश्यक सूचना सदन की मेज पर रखी हुई सूची में दी गई है।

(कृपया परिशिष्ट १ देखिये)

श्री चांदमल मेहता—इनको बाहर से बुलाने का क्या कारण है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—बहुत से पहले से रक्खे गये हैं। ये सब टेक्निकल हैन्ड्स हैं। वे लिये गये हैं और कुछ बहुत पहले ले लिये गये थे, उनको लिया है और उनको अभी एक्सटेन्शन दिया गया है क्योंकि उनकी हमारे यहां पर अभी आवश्यकता है।

श्री चांदमल मेहता—जो टेक्निकल व्यक्ति हैं उनके लिए पहले कोई आवेदनपत्र मांगे गये थे और क्या यह सही नहीं है कि बिना आवेदनपत्र मांगे ही उनको अपोइन्ट किया गया है और क्या ऐसे व्यक्ति राजस्थान में उपलब्ध नहीं हो सकते थे ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—ऐसे मामलों में आम तौर पर उनकी योग्यता और हमारी आवश्यकता को देखते हुए टेन्योर बेसिस पर नियुक्तियाँ की जाती हैं।

कु० श्री जसवन्तसिंह—क्या इस योग्यता के व्यक्ति राजस्थान में नहीं थे ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—हैं और वे भी इसी काम पर लगे हुए हैं। काम की कठिनाइयों को देखते हुए अधिक आदमियों को लेना पड़ता है।

श्री वेदपाल त्यागी—वे कब तक रहेंगे ? जो राजस्थान में लोन पर आये हैं ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—इसमें समय दिया हुआ है और मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि जल्दी ही वह समय आवेगा जब हमें बाहर के लोगों की जरूरत नहीं रहेगी।

श्री चांदमल मेहता—राजस्थान में लोन पर बुलाये गये व्यक्तियों में ओवरसियर ग्रेड के आदमी अधिक हैं, तो क्या यहां ओवरसियर ग्रेड के आदमी भी प्राप्त नहीं हो सकते थे, जिसकी वजह से उनको भी बाहर से बुलाने की आवश्कता पड़ी ?

Page No 8

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—सबसे बड़ी मुश्किल ओवरसियर प्राप्त करने की ही है ?

श्री चांदमल मेहता—मेरा जहां तक ख्याल है सरकार ने ओवरसियर लोगों के लिए जब आवेदन-पत्र मांगे तब काफी तादाद में आवेदन पत्र प्राप्त हुए थे। इस मामले में भी अगर आवेदन पत्र सरकार मांगती तो काफी तादाद में ओवरसियर यहां भी मिल सकते थे ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—ठीक ठीक जानकारी तो मुझे नहीं है पर जहां तक मालूम है राजस्थान में कोई भी ओवरसियर ट्रेन्ड व्यक्ति बिना सर्विस का नहीं है।

श्री चांदमल मेहता—जो बाहर से लोन सर्विस पर ओवरसियर आये उन्हें एग्ज़ीक्यूटिव इन्जीनियर की पोस्ट दी गई उसके बजाय राजस्थान के जो ओवरसियर सर्विस में थे उनको यह चान्स क्यों नहीं दिया गया ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—अब यह तो डिपार्टमेन्ट के हेड जो होते हैं वे उचित और योग्य समझते हुए जिसके लिए रिकमन्ड करके जो कागज भेजते हैं उन्हीं पर कार्यवाही की जाती है।

कु० श्री जसवंत सिंह—लोकल ओवरसियरों को काफी तादाद में नियुक्ति करने के लिए सरकार द्वारा क्या तजवीज की जा रही है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—इसके लिये हमने जोधपुर में इंजीनियरिंग कालेज है उसमें स्पेशल अरेन्जमेन्ट किया है। काफी तादाद में ओवरसियर और बढ़ने लग जावेंगे और पिलानी इन्जीनियरिंग कालेज में इनकी ट्रेनिंग के लिये और व्यवस्था की जा रही है। इसके अलावा जो इन्जीनियर्स इन कॉलेजों में होते हैं उनके लिए एक स्पेशल ब्रान्च की पोस्ट क्रिएट करने की बात भी सरकार के विचाराधीन है जिससे कि उनका भी उपयोग किया जा सके क्योंकि दरअसल हमारे यहां डिमान्ड अधिक है।

श्री चांदमल मेहता—इनमें से किन किन को एक्सटेन्शन देने का सरकार के सामने प्रश्न विचाराधीन है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—यह अलग प्रश्न है। आप किसी में इन्टरेस्टेड हों तो नाम ही बता दीजियेगा न। नाम ही बता दें तो मुझे भी आसानी होगी, आपको उत्तर देने में।

श्री अध्यक्ष—स्पेसिफिक पूछ लीजियेगा।

श्री चांदमल मेहता—नं० ३ पर श्री वर्मा हैं जिनकी नियुक्ति मार्च ५३ से ३ साल के लिए की गई है। क्या सरकार उनका कार्यकाल बढ़ाने का विचार कर रही है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—वैसे मेरा ख्याल है ये ओवरसियर नहीं, बी० एस० सी० हैं। इसके अलावा मुझे मालूम नहीं कि कोई एक्सटेन्शन की कार्यवाही जारी है या नहीं।

रावत श्री शम्भूसिंह—जो रिटायर्ड ओवरसियर हैं, कमी को देखते हुए और बाहर से लौन पर बुलाने के बजाय, उनको रिएम्प्लोय करने का सरकार का विचार है ?

श्री अध्यक्ष—यह और चौथा सवाल किया गया।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—कहीं कहीं उनका भी विचार किया गया है पर उमर का ख्याल तो रक्खा ही जायगा।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या सरकार, मन्त्री और डिप्टी मन्त्री भी, लोन पर रखने का विचार कर रही है।

श्री मथुरादास माथुर—हमारे यहां तो पहले से ही बहुत हैं।

प्रश्न संख्या ५

राजस्थान के जिलों व तहसीलों के सीमा पुनर्निर्धारण सम्बन्धी समिति

श्री सरदारसिंह—क्या राजस्व मंन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे:

(क) राजस्थान के जिलों व तहसीलों की सीमा के पुनर्निर्धारण के लिये क्या कोई कमेटी नियुक्त की गई है ?

(ख) यदि हां, तो क्या उसका कार्य पूर्ण हो चुका है ?

(ग) क्या उक्त कमेटी ने स्थानीय प्रतिनिधियों की राय ली थी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

(घ) क्या इस कमेटी की रिपोर्ट तैयार है ? यदि हां, तो कब तक प्रकाशित हो जायगी ?

श्री दामोदरलाल व्यास (राजस्व मन्त्री)—(क) जी हां।

(ख) जी नहीं।

(ग) कमेटी की कार्यवाही अभी जारी है और जिस जिससे परामर्श करने की आवश्यक्ता होगी कर ली जायगी ?

(घ) जी नहीं ?

श्री भैरूंसिह (१६)— इस कमेटी का निर्माण किस वर्ष में हुआ था और किस वक्त तक इसकी अन्तिम रिपोर्ट चाही गई थी ?

श्री दामोदरलाल व्यास— ३१ मार्च, ५५ को निर्माण हुआ था और इस साल के आखीर तक रिपोर्ट चाही गई थी।

श्री भैरूंसिंह (१६)— इसमें देरी होने का क्या कारण है ?

श्री दामोदरलाल व्यास— क्योंकि इसके लिए कमेटी को बहुत सा डेटा क्लेक्ट करना पड़ा ?

श्री मानसिंह महार— इस कमेटी के कौन कौन सदस्य हैं ?

श्री दामोदरलाल व्यास—

चीफ सेक्रेटरी	चैयरमैन
एडीशनल सेक्रेटरी	सदस्य
चेयरमैन, बोर्ड ऑफ रैवेन्यू	,,
होम सेक्रेटरी	,,
रेवेन्यू सेक्रेटरी	,,
डिप्टी सेक्रेटरी, प्लानिंग	,,

श्री भैरूंसिंह— (१६) इसकी अबतक कीतनी बैठकें हुई हैं ?

श्री दामोदरलाल व्यास— यह अलग से प्रश्न है ?

(हंसी)

प्रश्न संख्या ६

राजस्थान में जलबोर्ड द्वारा डिस्ट्रिक्ट वाइज़ व तहसील वाइज रकम का वितरण

श्री सरदारसिंह— क्या स्वायत्त शासन मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे—

(क) राजस्थान में जल बोर्ड द्वारा डिस्ट्रिक्ट वाइज़ व तहसील वाइज़ अब तक कितनी रकम वितरित की गई है ?

(ख) क्या जो रकम जलबोर्ड से वितरित की जाती है उसका एक तिहाई भाग पब्लिक द्वारा एकत्रित किया जाना आवयक है ?

(ग) अगर हां, तो अब तक तहसील व जिला वाइज कितनी २ रकम एकत्रित की गई ?

(घ) क्या तहसील उनियारा, डिस्ट्रिक्ट टोंक में ग्राम बनेठा व ग्राम चीरू में जलबोर्ड से कोई रकम दी गई थी?

Page No 11

[श्री सरदारसिंह]

(ङ) अगर हां, तो कितनी कितनी और किस किस कार्य के लिये तथा ग्रामीणों से कितनी कितनी रकम एक तिहाई के रूप में वसूल हुई ?

(च) इस वितरित रकम में से कितनी रकम का हिसाब का दाखला हो चुका व इसके खर्चे की जांच किस अधिकारी द्वारा की गई है ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (स्वायत्त शासन मन्त्री)— (क) जलबोर्ड द्वारा अब तक डिस्ट्रिक्ट वाइज वितरित की गई धनराशि की सूची निम्न प्रकार है—

(१) जयपुर	१,५६,०००)
(२) टोंक	८६,०००
(३) सवाई माधोपुर	७०,६७०)
(४) भरतपुर	६५,०००)
(५) अलवर	१,१५,०००)
(६) सीकर	२,६५,०००)
(७) झुंझुनूं	२,६७,०००)
(८) जोधपुर	४,२४,०००)
(९) पाली	६१,०००)
(१०) जैसलमेर	१,३०,०००)
(११) बाडमेर	१,७७,०००)
(१२) जालोर	१,७६,०००,)
(१३) सिरोही	८४,०००)
(१४) नागौर	५,३०,०००)
(१५) बीकानेर	३,०५,०००)
(१६) चूरू	३,६५,०००)
(१७) गंगानगर	१,४७,०००)
(१८) कोटा	२,००,०००)
(१९) बूंदी	६७,०००)
(२०) झालावाड़	६६,०००)
(२१) उदयपुर	१,७४,०००)
(२२) भीलवाड़ा	५४,०००)
(२३) बांसवाड़ा	५४,०००)
(२४) डूंगरपुर	४२,०००)
(२५) चित्तौड़गढ़	६३,०००)

[श्री बद्रीप्रसाद गुप्त]

तहसील वाइज़ विवरण तैयार किया जा रहा है और तैयार हो जाने पर सदन की मेज पर रख दिया जावेगा।

(ख) यह आवश्यक है कि जिन ग्रामों को सहायता दी जावे वे १।३ खर्चा, श्रम, सामान व नकद के रूप में प्रस्तुत करने का जिम्मा लें।

(ग) अभी तक काम चालू है। पूरा होने पर ही गांवाई हिस्से का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया जाना सम्भव हो सकता है।

(घ) केवल बनेठा ग्राम में ही ऐसी सहायता दी गई है।

(ङ) जो रकम बनेठा में दी गई उसका विवरण इस प्रकार है—

	स्वीकृत रकम,	दी गई रकम,	गांवाई	श्रम	हिस्सा जो प्राप्त हुआ।
सुन्दरवाडी	६००	५१६	२१६	१४	०
बावडी पुरोहितान	५००	४३०	१३०	०	०
कुआ पंचायती पैरवाल	४००	२१५	१२५	०	०
तालाब जोधाजी	८००	६८८	११४	१५	०

गांवाई हिस्से की रकम अभी पूरी प्राप्त नहीं हुई है क्योंकि अभी तक काम चालू है।

(च) हिसाब की जांच हो जाने पर ही निर्णयात्मक उत्तर दिया जा सकता है। अभी काम चालू है। काम खतम होने पर खर्च की जांच होती है। ऐसा होने पर ही प्रश्न का उत्तर दिया जा सकेगा।

श्री सरदारसिंह—अध्यक्ष महोदय, मुझे इसकी प्रतिलिपि नहीं मिली है।

श्री बद्रीप्रसाद—मैंने जवाब पढ़ दिया न।

श्री सरदारसिंह—यह जिलेवार बटवारा रुपयों का किस आधार पर किया गया है ?

श्री बद्रीप्रसाद—जिलों की आवश्यकता को देखते हुए।

श्री भैरूं सिंह(१६)—इस आवश्यकता की जानकारी के लिए किस बात की पूर्ति होनी चाहिये थी ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता—पानी की कमी होना और वहां पानी की मांग का होना।

श्री भैरूसिंह—इस प्रकार की रिपोर्ट जिला प्रबन्ध कमेटी द्वारा मांगी गई थी या कलेक्टर के द्वारा या किसी और आधार पर यह रकम दी गई ? किससे आपने रिपोर्ट मांगी ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता—जिला वितरण कमेटी का अध्यक्ष कलेक्टर ही होता है।

श्री भैरूंसिंह—तो नागौर में ५ लाख की धनराशि स्वीकृत की गई है यह किसके प्रोपोज़ल से की गई है ?

श्री कुं० जसवन्तसिंह—पानी की कमी नागौर में है या जैसलमेर में, वहां आपने पांच लाख की रकम देदी और जैसलमेर में १ लाख तीस हजार ही ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता—यही तो मैंने अर्ज किया न कि जहां की जैसी डिमान्ड थी उसी के माफिक रुपया दिया गया।

श्री भैरूंसिंह—यह बात नहीं है, पहले रकम निर्धारित की जाती है और उस रकम के अनुसार फिर प्रोपोज़ल मांगे जाते हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता—यह बात गलत है।

श्री सरदारसिंह—मेरे इधर एक गांव में मदद दी गई, गांव वाले उसका अपोजीशन करते थे, पर उनकी किसी ने नहीं सुनी और उस तालाब से वहां के पचास घर गूजरों के बिलकुल नेश्तनाबूद हो गये और इसके बाद मुझे जलबोर्ड का सदस्य बनाया गया तो सदस्य के लिए आपसे अनुमति ली गई थी ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता—यह तो आपने बहुत अच्छी बात कही, मैं जानकारी हासिल करके इसका उत्तर दे सकूंगा।

श्री सरदारसिंह—उणियारा तहसील में छोरु गांव है। वहां के लोगों ने इसके लिए १० हजार रुपया दिया, पर उसमें से अभी तक एक हजार का काम भी नहीं हुआ ?

श्री बद्री प्रसाद गुप्ता—यह आपने जानकारी दी है, पता लगाकर बताऊंगा।

श्री सरदार सिंह—माननीय मन्त्रीजी की जानकारी के लिए ही तो हम सवाल करते हैं।

श्री भैरूंसिंह—जल बोर्ड के रुपयों की जांच करने के लिए सरकार ने क्या व्यवस्था कर रखी है ?

श्री गुप्ता—जल बोर्ड के ऊपर जो रुपये खर्च होते हैं, उसका ३५ प्रतिशत यहां से देते हैं, सार्टीफिकेट कलेक्टर के द्वारा दिया जाता है उसके बाद २५ परसेन्ट दिया जाता है।

श्री मानसिंह महार—जल बोर्ड के रुपयों का जहां दुरुपयोग होता है उसकी शिकायत की वास्तविकता की क्या जांच कराई जायगी ?

श्री गुप्ता—अभी तक तो मेरे पास ऐसी कोई शिकायत नहीं आई है। जलबोर्ड का काम जितना सन्तोषजनक है उससे मुझे काफी खुशी है।

श्री सरदार सिंह—क्या माननीय मन्त्री चोर्या गाँव में जो रकम सरकार से चली गई वह खर्च नहीं हुई है उसकी जांच करायेगें ?

श्री गुप्ता—जांच कराऊंगा।

श्री भैरूसिंह (वि० सं० १६)—मेरा प्रश्न यह है कि जल बोर्ड के द्वारा गांवों में रुपया तकसीम किया जाता है वह खर्च होता है उसकी जांच किस प्रकार से होती है ? मैं देने के बारे में नहीं पूछ रहा हूं कि कलेक्टर के सार्टीफिकेट पर वह दिया जाता है।

श्री गुप्ता—काम पूरा होने पर कलेक्टर सार्टीफिकेट देता है। जलबोर्ड कमेटी देखती है। हरेक डिस्ट्रिक्ट और हरेक गांव में कमेटी के द्वारा वह रुपया दिया जाता है। खर्च होने के बाद कलेक्टर का सार्टीफिकेट आता है।

श्री जयनारायण व्यास—मेरा ऐसा ख्याल है कि वह कलेक्टर के जरिये से सर्टीफाई होता है उससे उन्हें सन्तोष नहीं होता है उनका शायद यह कहना है कि कलेक्टर ओन दी स्पोट जाकर जांच करते हैं या नहीं ?

श्री गुप्ता—कलेक्टर अपनी एजेंसी के जरिये से जांच करवाता है। एस० डी० ओ० और तहसीलदार जाते हैं।

श्री जयनारायण व्यास—कम से कम तहसीलदार तो जाता है।

श्री गुप्ता—जी हां। कलेक्टर खुद भी जाते हैं और तहसीलदार भी जाते हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—मन्जूरी जो वाटर बोर्ड से होती है उसमें प्रत्येक वर्क को स्पेसीफाई करके भेजा जाता है या केवल गांव का नाम और रकम लिखी जाती है।

श्री गुप्ता—प्रत्येक वर्क स्पेसीफाई होता है कि फलां २ जगह की डिमान्ड है, उसके अनुसार होता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या जल बोर्ड के यह रूल्स हैं कि एप्लीकेशन्स में इस प्रकार के वर्क्स हों तभी विचार किये जांय ?

श्री गुप्ता—जहां आवश्यकता होती है; किसी गांव में कुए बनाना है, बावड़ी होती है या तालाब की बात होती है तो जैसी डिमान्ड आती है उसके आधार पर वह दिया जाता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—कुए बनाने हैं तो कैसे कुए बनाने हैं, गहरा करना है या

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

बनवाना है ? ऐसा स्पेशीफाई सेन्क्शन के अन्दर होता है या केवल गांव का नाम और रकम ही सेन्क्शन होती है ?

श्री गुप्ता—एक उसका फार्म होता है। गांव वालों से एक एग्रीमेंट होता है कि हम इतना देंगे उसके आधार पर वह दिया जाता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—I want a specific answer. Are these specific details entered in the sanctioning order or only the name of the village and the amount indicating the well or baori alone is mentioned in the order? Whether it is repair, construction or deepening and if it is well, then which well, are these details being entered in that? I am prepared to get the question answered fully.

श्री गुप्ता—उस गांव का नाम कि फलां गांव में काम हुआ वह गांव वालों से जो एग्रीमेंट होता है उसमें सब स्पेसीफाई होता है।

श्री सरदार सिंह—क्या मन्त्री जी यह बतलायेंगे कि जल बोर्ड की रकम जहां वितरित की जाती है वहां के क्षेत्र के एम० एल० ए० को भी उसमें शामिल किया जाता है ?

श्री गुप्ता—जो एम० एल० ए० तकलीफ करते हैं उनको पूछा ही जाता है।

एक माननीय सदस्य—वह सदस्य जयपुर में रहते हैं या उनियारे में रहते हैं ?

श्री भैरूसिंह—जल बोर्ड का हिसाब तहसीलदार के पास पेश किया जाता है या जल वितरण कमेटी के पास पेश किया जाता है ?

श्री गुप्ता—हिसाब जल वितरण कमेटी को दिया जाता है। सर्टीफाई जब तक वह रेक्टीफाई नहीं हो जाता है तब तक नहीं होता है।

श्री सरदार सिंह—अभी एक माननीय सदस्य ने यह कहा कि मैं जयपुर में रहता हूं और उनियारे में नहीं रहता हूं, तो माननीय अध्यक्ष, आइन्दा इलेक्शन में उनको उनियारे से खड़ा कर दिया जाय और मुझे जयपुर से खड़ा कर दिया जाय। (हंसी)

श्री भैरूसिंह (वि० सं० १६)—क्या यह सही है कि जब तक जल वितरण कमेटी हिसाब तहसीलदार के पास नहीं भेजती है तब तक तहसीलदार को कोई अधिकार नहीं है कि स्पोट पर जाकर एन्क्वारी करे ?

श्री गुप्ता—जल बोर्ड रुपया देता है तो तहसीलदार के लिए लाजमी है कि........

श्री भैरूसिंह—क्या यह समझा जाय कि तहसीलदार जिन हिसाब को स्वीकार कर ले वही अन्तिम मान लिये गये और बाकी सब गलत ?

श्री गुप्ता—नहीं, अन्तिम नहीं माने गये हैं।

श्री जसवन्त सिंह—इस हिसाब का ऑडिट होता है ? अगर होता है तो कौन करता है ?

श्री गुप्ता—लोकल फन्ड ऑडिट डिपार्टमेंट वह ऑडिट करता है। इसमें ६६ लाख रुपयों का काम हुआ है। जहां जहां आडिट की जरूरत पड़ेगी वहां कर दिया जायगा।

श्री जसवन्तसिंह—अभी तक ऑडिट नहीं हुआ ?

श्री गुप्ता—अभी तक तो काम चल रहा है।

श्री भैरूसिंह—क्या यह सही है कि एक भी एकाउन्ट का ऑडिट नहीं हुआ है ?

श्री गुप्ता—यह लोकल फन्ड ऑडिट का काम है, उसकी ड्यूटी है।

श्री भैरूसिंह—जो कुछ भी आज तक काम हुआ है उसका ऑडिट नहीं हुआ है क्या यह सही है ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या उनसे ऐसा पूछा गया है। उनसे रिक्वेस्ट की गई है लोकल फन्ड आडिट को ?

श्री गुप्ता—जी नहीं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—दी फर्स्ट वर्क कम्प्लीटेड इन नवम्बर १६५५, उसके ऑडिट के लिए अभी तक कोई अप्रोच नहीं किया गया।

श्री गुप्ता—आज मेरे पास ऐसी कोई बात नहीं है।

श्री मानसिंह महार—जल बोर्ड की जितनी कमेटियां बनाई गई हैं उनमें कांग्रेस के अलावा और भी लिये जाते हैं ?

श्री गुप्ता—जनसेवकों को लिया जाता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जनसेवकों का सर्टीफिकेट कैसे करार किया गया है ?

श्री गुप्ता—वह सार्टीफिकेट तो जनता के दिलों में है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जनता के दिलों को टटोलने का कौन सा यन्त्र ईजाद किया है ?

श्री अध्यक्ष—श्री चांदमल मेहता (कुछ सदस्यों द्वारा पूरक प्रश्न पूछने के लिए खड़े होने पर)। अब राजप्रमुख के भाषण पर बहस करेंगे तो सारा गुबार निकालियेगा।

Page No 17

प्रश्न संख्या ७

सन् १९५५-५६ व ५६-५७ में खुलने वाले आयुर्वेदिक औषधालय

श्री चांदमल मेहता—क्या स्वास्थ्य मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

१. ५५-५६ के आर्थिक वर्ष में राजस्थान में कितने आयुर्वेदिक औषधालय खोलने की योजना है ?

२. अब तक उक्त योजना के अन्तर्गत कहां कहां औषधालय खोले जा चुके हैं ?

३. ५६-५७ के वित्तीय वर्ष में कितने औषधालय खोलने की योजना है ?

श्री बद्री प्रसाद गुप्ता (स्वास्थ्य मंत्री)—(१) ७० ।

(२) सूची सदन की मेज पर रख दी गई है ।

(कृपया परिशिष्ट २ देखिये)

३. अभी अन्तिम निश्चय नहीं हुआ ।

श्री चांदमल मेहता—औषधालय खोलने के लिए सरकार द्वारा क्या क्राइटेरिया निश्चित किया गया है ?

श्री गुप्ता—आबादी व आवश्यकता के लिहाज से ।

श्री मेहता—परबतसर तहसील में ऐसे कितने ग्राम हैं कि जिनके आवेदन पत्र अस्वीकार कर दिये हैं औषधालय खोलने के लिए ।

श्री गुप्ता—यह तो आपने डिटेल की बात पूछी है, अभी नहीं बता सकता ।

श्री मेहता—क्या ऐसे भी ग्राम हैं जहां औषधालय की स्वीकृति दे दी गई परबतसर तहसील में, लेकिन उनके बजाय औषधालय अलवर में खोल दिये गये ?

श्री गुप्ता—ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है ।

श्री मेहता—क्या यह सही है कि जावड़ा ग्राम के लिए औषधालय की स्वीकृति दे दी गई, लेकिन औषधालय नहीं खोला गया ?

श्री गुप्ता—नहीं, ऐसा नहीं है ।

श्री मेहता—क्या यह सही है कि यह जो संलग्न लिस्ट है इसमें जयपुर जिले में औषधालय खोलने के बारे में पूर्ण उपेक्षा की गई है ?

Page No 18

श्री गुप्ता—जयपुर जिले में व कुछ अन्य जिलों में यह काम डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा किया जाता है इसलिए वहां नहीं किया गया है।

श्री मानसिंह महार—डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अपनी तरफ से पैसा देते हैं तो फिर जयपुर को इससे वंचित क्यों रखा जाता है ?

श्री गुप्ता—राज्य की तरफ से उनको ३।४ पैसा दिया जाता है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को ऐसे काम के लिए ३।४ रुपया दिया जाता है। जयपुर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को ५ लाख रुपया इस साल दे रहे हैं।

श्री मेहता—जिन दूसरे जिलों में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हैं क्या यह सही है कि उनमें औषधालय खोलने के लिए काफी स्थान स्वीकार किये गये हैं।

श्री गुप्ता—मैंने आपसे निवेदन किया है डिस्ट्रिक्ट बोर्डस् के बजट मन्जूर कर दिये गये हैं। ऐसे चार डिस्ट्रिक्ट बोर्ड्स हैं, उनमें जयपुर एक ऐसा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है जिसमें सबसे ज्यादा औषधालय आबादी के हिसाब से हैं। और जगह २३ हजार पर हैं लेकिन जयपुर में १० हजार की आबादी एक औषधालय खोला गया है।

श्री मानसिंह महार—अगर १।४ गवर्नमेंट देती है तो जयपुर जिले को उससे बिल्कुल वंचित क्यों रखा जाता है ?

श्री गुप्ता—३।४ देती है।

श्री भोपालसिंह—बावड़ा गांव के अन्दर जो औषधालय था उसको क्यों उठाया गया ?

श्री गुप्ता—मुझे जानकारी नहीं है।

श्री अध्यक्ष—नेक्स्ट

प्रश्न संख्या ८

अतिवृष्टि के कारण खरीफ की फसल को हानि एवं जि. टोंक में इस हेतु कृषकों को आर्थिक सहायता

श्री सरदारसिंह :—क्या राजस्व मंत्री निम्न लिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) क्या राजस्थान में खरीफ की फसल अतिवृष्टि के कारण गत सालों के मुकाबले में कम हुई है ?

(ख) क्या सरकार को इसका डिस्ट्रिक्ट व तहसीलवाइज स्टेटमेंट प्राप्त हुआ है ?

(ग) क्या यह सही है कि टोंक डिस्ट्रिक्ट में ज्वार, मक्का व तिल आदि की फसल अति वृष्टि से प्रायः नष्ट सी हो गई थी ?

[श्री सरदारसिंह]

(घ) अगर हां, तो सरकार ने काश्तकारान को राहत देने की अब तक क्या कार्यवाही की ?

(ङ) अगर नहीं, तो क्यों नहीं ?

श्री दामोदरलाल व्यास (राजस्व मंत्री)—(क) आम तौर पर अति वृष्टि के कारण खरीफ फसल गत सालों के मुकाबले कम हुई है।

(ख) जी हां।

(ग) जी नहीं, फसल का जो नुकसान गस्त गिरदावरी की जांच के बाद बताया गया है वह ६ आना से कम है।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता।

(ङ) चूंकि जो राहत देने के नियम बने हुए हैं उनके अनुसार यह राहत पाने के अधिकारी नहीं होते।

श्री सरदारसिंह—क्या मंत्री जी यह बतलाने की कृपा करेंगे कि इस संबंध में उनके पास प्रार्थना-पत्र पेश हुए थे ?

श्री दामोदरलाल व्यास—प्रार्थना-पत्र तो बहुत से पेश हुए थे लेकिन गश्त गिरदावरी से जिनके बारे में यह पता चला है कि उनका नुकसान ६ आने से कम है इसलिये राहत के हकदार नहीं हैं।

श्री दलीपसिंह—क्या मंत्री जी को यह पता है कि कोटा डिविजन में फसल रुपये में ४ आने से भी कम हुई।

श्री दामोदरलाल व्यास—जी नहीं ?

श्री हिम्मतसिंह—यह गस्त गिरदावरी कौनसी तारीख को हुई थी ?

श्री दामोदरलाल व्यास—इसके लिये समय मुकर्रर है, अक्टूबर नवम्बर के महीने।

श्री हिम्मतसिंह—किस गांव के लिये ?

श्री दामोदरलाल व्यास—जिसके लिये यह सवाल है।

श्री कंवरलाल जेलिया—क्या राजस्व मंत्री जी का ध्यान इस ओर दिलाया गया कि कोटा में फसल इतनी कम हुई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—ध्यान तो कई बातों की ओर दिलाया गया लेकिन जांच करने के बाद पता चला कि नुकसान रुपये में ६ आने से कम हुआ, इसलिये राहत नहीं दी गई।

श्री कंवरलाल जेलिया—क्या कोटा डिस्ट्रिक्ट में चार आना से भी कम फसल हुई, इस ओर क्या आवश्यक कदम उठाया गया ?

श्री दामोदरलाल व्यास—हर जगह की जांच करवाई गई और नियम के अनुसार जहां राहत देनी थी वहां राहत दी गई।

श्री हिम्मतसिंह—गस्त गिरदावरी किस तरह से की गई थी ?

श्री दामोदरलाल व्यास—यह तो आप ज्यादा जानते हैं।

श्री माधोसिंह भैंसवाड़ा—जालोर में फसल दो आना से भी कम थी, इसलिये वहां बीघोड़ी में छूट क्यों नहीं दी गई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—कहां का सवाल है ?

श्री माधोसिंह भैंसवाड़ा—जालोर डिस्ट्रिक्ट का।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जालोर में वर्षा इसलिये नहीं हुई कि................

श्री अध्यक्ष—Order Please !

श्री जसवन्त सिंह—What is the reply

श्री दामोदरलाल व्यास—I said there is no information so far regarding Jalore.

श्री कंवरलाल जेलिया—कोटा जिले में जांच के परिणामस्वरूप क्या कदम उठाया गया ?

श्री दामोदरलाल व्यास—आप कुछ तहसीलों का नाम बतावें तो पता चले।

श्री कंवरलाल जेलिया—मैं लाडपुरा तहसील के बारे में पूछना चाहता हूं।

श्री दामोदरलाल व्यास—यह अलग प्रश्न है। इसकी अलग सूचना प्राप्त करनी होगी।

श्री कंवरलाल जेलिया—क्या यह सही है कि मंत्रीजी का ध्यान कोटा जिले की कई तहसीलों की ओर दिलाया गया था ?

श्री अध्यक्ष—यह अलग सवाल है, अलग सवाल पूछिये जवाब जरूर मिलेगा।

प्रश्न संख्या ६

अतिवृष्टि के कारण क्षति एवं परबतसर व किशनगढ़ सबडिवीजन में इस हेतु कृषकों को आर्थिक सहायता

श्री चांदमल मेहता—क्या राजस्व मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) चालू वर्ष में राजस्थान में अतिवृष्टि से कहां कहां नुकसान हुआ है ?

(ख) राज्य सरकार द्वारा कहां कहां क्या क्या रियायतें दी गई हैं ?

(ग) परवतसर सबडिविजन और किशनगढ़ सबडिविजन के कितने गांवों में अति वृष्टि से क्षति हुई है ?

(घ) उक्त ग्राम के किसानों को सरकार द्वारा क्या रिआयत दी गई है ?

श्री दामोदरलाल व्यास (राजस्व मंत्री)—(क) चालू वर्ष में राजस्थान में अति वृष्टि से करीब-करीब सब जगह नुकसान हुआ है ।

(ख) जिला चूरू की तहसीलात के लिये ११,५०० रु०

जिला गंगानगर	,,	,,	,,	५,००० रु०
जिला उदयपुर	,,	,,	,,	५,००० रु०

जिनके मकानों को नुकसान हुआ है उनकी इमदाद के लिये दिये गये हैं और बाकी तहसीलों में जो तजवीज आई है उन पर निर्णय शीघ्र लिया जाने वाला है ।

(ग) परवतसर सबडिविजन के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट क्लेक्टर नागौर से माह फरवरी में प्राप्त हुई है उसके अनुसार तहसील परबतसर के ५० गांवों में व नावा के ८ गांवों में अति वृष्टि एवं समय पर वर्षा न होने से क्षति हुई है । किशनगढ़ सबडिविजन के किसी ग्राम में अति वृष्टि से क्षति के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं है ।

(घ) इस सम्बन्ध में जो नियम बने हुए हैं उनके अनुसार फसल खरीफ के लगान में मुनासिब काम की सिफारिशें जो सम्बन्धित अधिकारियों की ओर से प्राप्त हुई हैं उन पर शीघ्र ही निर्णय किया जाकर आदेश जारी कर दिये जावेंगे और जहां-जहां जरूरत होगी टेस्ट वर्क्स जारी कर दिये जावेंगे ।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि परबतसर तहसील में अति वृष्टि के कारण कितने गाँवों को कितनी-कितनी हानि हुई, इसका निर्णय अभी तक नहीं दिया गया ?

श्री दामोदरलाल व्यास—इस बारे में कलेक्टर नागौर को जांच करने के लिये कहा गया था। उनकी रिपोर्ट २१ फरवरी को प्राप्त हुई लेकिन उसमें यह नहीं बताया गया था कि किस किस गांव में कितना-कितना नुकसान हुआ, इसलिये उनको वापिस लिखा गया है।

श्री चांदमल मेहता—क्या इस बारे में कोई डेपुटेशन मंत्रीजी से मिला था ?

श्री दामोदरलाल व्यास—मुझे याद नहीं पड़ता।

श्री चांदमल मेहता—एक डेपुटेशन में तो मैं स्वयं मौजूद था।

श्री दामोदरलाल व्यास—डेपुटेशन तो नहीं मिली, लेकिन माननीय सदस्य ने स्वयं ने कहा था। मैंने कलेक्टर नागौर को लिखा था उसके अनुसार जांच की गई लेकिन रिपोर्ट में यह नहीं लिखा था कि कितना नुकसान हुआ। लेकिन जहां छः आने से कम नुकसान हुआ वहां राहत नहीं दी गई।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि किशनगढ़ सबडिविजन की अराई तहसील में २ आना भी फसल नहीं हुई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—यह गलत है।

श्री चांदमल मेहता—आपने किसके द्वारा जांच कराई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—कलेक्टर के द्वारा।

श्री चांदमल मेहता—क्या कलेक्टर खुद वहां गये थे ?

श्री दामोदरलाल व्यास—यह मैं नहीं कह सकता।

श्री चांदमल मेहता—जांच कब कराई गई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—गस्त गिरदावरी में यह दर्ज नहीं है कि अराई में इतना नुकसान हुआ।

श्री चांदमल मेहता—क्या गस्त गिरदावरी में यह दर्ज है कि अराई तहसील में पैदावार २ आना से कम हुई ?

श्री दामोदरलाल व्यास—किशनगढ़ में कहीं भी बहुत ज्यादा नुकसान नहीं हुआ ?

श्री चांदमल मेहता—क्या मंत्रीजी इसके लिये जांच कमीशन बैठाने के लिये तैयार है ?

श्री दामोदरलाल व्यास—अवश्य। जब कि आपने सूचना दी है तो जांच करवाई जायगी।

श्री कंवरलाल जेलिया—कोटा डिस्ट्रिक्ट में कितना नुकसान हुआ ?

श्री अध्यक्ष—कोटा डिस्ट्रिक्ट बीच में कहां से आ गया ? आप अलग प्रश्न पूछिये ।

प्रश्न संख्या १०

कुटीर उद्योग हेतु राजस्थान को स्वीकृत राशि में से जि० टोंक को स्वीकृत धन राशि

श्री सरदारसिंह—क्या उद्योग मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) प्रथम पंचवर्षीय योजना में कॉटेज इंडस्ट्रीज के हेतु राजस्थान में कितनी धन राशि स्वीकृत की गई थी ?

(ख) क्या डिस्ट्रिक्ट टोंक में भी कोई रकम दी गई थी ?

(ग) यदि हां, तो कहां कहां और किस किस को और यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

श्री भोगीलाल पंड्या (उद्योग मंत्री)—(क) ३८,५०,००० रूपये (अड़तीस लाख पचास हजार रुपये)।

(ख) हां ।

(ग) (१) भेड़ व ऊन उद्योग की तरक्की के लिये टोंक जिले में २ केन्द्र मालपुरा और निवाई में खोले—२६,६२७ रु०

(२) सरकारी जीनिंग व प्रेसिंग फेक्ट्री टोंक को पुनः चालू किया गया—५४,७६६ रु०

(३) जयपुर स्थित वीविंग एंड डाइंग डिमोन्स्ट्रेशन पार्टी पर जिसमें टांक जिला भी शामिल है—६०,२३६ रु०

(४) होरडी सागर में ताड़गुड़ शिक्षा केन्द्र—७०० रु० ।

(५) हाथ कर्घा उद्योग के अन्तर्गत निम्नलिखित सहकारी समितियों को ऋण दिया गया।

(१) टोंक जुलाहा उत्पादक सहकारी समिति, टोंक	५,७५० रु०
(२) लावा महावर बुनकर सहकारी समिति, लावा	१,५५२ रु० ८ आना
(३) राजस्थान बुनकर सहकारी समति, राजमहल	१,७८२ रु० ८ आना
(४) टोडा रायसिंह बुनकर सहकारी समिति	७८७ रु० ८ आ०
(५) निवाई बुनकर सहकारी समिति	१४३७ रु० ८ आ०
(६) पचावर बुनकर	४६० रु०
	११,७३० रु०

श्री सरदारसिंह—क्या मंत्री जी को तहसील उणियारा और दूनी से नाराज़गी है जिसके कारण उसका कहीं नाम भी नहीं आया ?

श्री भोगीलाल पंड्या—बड़ी खुशी होती यदि वहां भी सहायता दी जाती, लेकिन वहां कार्यकर्त्ता नहीं होने से सहकारी समितियां नहीं बन रही हैं, सहकारी समितियां नहीं बनने का दुःख है। लेकिन अब सरकार ने यह सोचा है कि जहां कार्यकर्त्ता नहीं हैं वहां भी ऐसी समितियां खोली जांय।

श्री सरदारसिंह—कार्यकर्त्ता का क्या मतलब है। क्या वहां आदमी नहीं बसते, सब पशु ही बसते हैं ?

श्री भोगीलाल पंड्या—आदमी जरूर बसते हैं और योग्य आदमी बसते हैं लेकिन वे ऐसी समितियों में दिलचस्पी नहीं लेते।

श्री मानसिंह महार—क्या रावराजा साहब कार्यकर्त्ता नहीं है ?

श्री अध्यक्ष—Order please ! Next question.

प्रश्न संख्या ११

संचालक, माइन्स एवं जियोलोजी के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु प्रार्थना पत्र

श्री चांदमल मेहता—क्या खनिज मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(१) डाइरेक्टर ऑफ माइन्स एंड जियोलोजी का स्थान कितने समय से रिक्त है ?

(२) उक्त स्थान पर कौन कितने समय से काम कर रहे हैं ?

(३) क्या इस स्थान की पूर्ति के लिए कोई आवेदन-पत्र आमान्त्रित किये गये थे ?

(४) यदि हां, तो कब ?

(५) उक्त स्थान की पूर्ति के लिये पी. एस. सी. द्वारा क्या योग्यतायें निर्धारित की गई थीं ?

(६) कितने प्रार्थना-पत्र उक्त स्थान के लिये पेश हुए ?

(७) अभी तक इस स्थान की पूर्ति नहीं होने का क्या कारण है ?

श्री भोगीलाल पंड्या (खनिज मंत्री) (१) मार्च १९५१ से।

(२) श्री मुन्शीलाल सेठी, १४. ३. १९५१ से।

(३) हां।

[श्री भोगीलाल पंड्या]

(४) जून १६५४ के अंतिम सप्ताह में।

(५) योग्यताएं निम्न लिखित थीं ?

Essential : 1st Class Diploma in Mining Engineering of Geology from the School of Mines, Dhanbad or 1st Class Degree in Mining Engineering from a recognised University or 1st class Master's Degree in Geology from a recognised University with at least two of the subjects at the B. Sc. Stage [Physics, Chiemistry and Mathematics].

2. Thorough training in all aspects of Mining or Mineral Development.

3. Professional experience in Mining Engineering or Mineral Development of about 20 years, out of which at least 15 years should have been in a responsible capacity with independent charge of work connected with mineral development and utilisation with approved results and intimate administrative experience of leasing of minerals and sound knowledge of the Indian mineral trade and industry.

Desirable : (1) Experience in inspection of mines throughout India for effecting development and conservation of minerals.

(2) knowledge of sampling, ore-dressing, benefiction and processing of minerals.

Grade 1000-50-1400.

Knowledge of simple Hindi essential.

(६) १० प्रार्थना पत्र।

(७) उपयुक्त अधिकारी का न मिलना।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि जो आवेदन-पत्र आये उनमें से जो क्वालिफिकेशन तय की गई थी उस क्वालिफिकेशन के आदमी मौजूद थे !

श्री भोगीलाल पंड्या—नहीं, उनमें से किसी को उपयुक्त नहीं समझा गया।

श्री चांदमल मेहता—उपयुक्त नहीं समझने का क्या कारण है जब कि वे ही क्वालिफिकेशन्स मौजूद थीं ?

श्री भोगीलाल पंड्या—वे क्वालिफिकेशन्स मौजूद नहीं थीं।

श्री चांदमल मेहता—ऐसा कौन था जिनकी क्वालिफिकेशन्स पूरी नहीं थीं ?

श्री भोगीलाल पंड्या—जिनकी दर्खास्तें आई उनमें ऐसा कोई नहीं था। सैन्टर ने तीन नाम रिकमन्ड किये थे। पहला नाम मिस्टर दर का था, लेकिन वे क्वालिफाइड नहीं थे। दूसरा नाम श्री के. एल. मल्ला का था, एक मिस्टर आर. दिवाकर थे; लेकिन उनमें से कोई भी पूरा क्वालिफाइड नहीं था इसलिये उनको नहीं लिया गया।

श्री चांदमल मेहता— क्या यह सही है कि जो व्यक्ति मौजूदा समय में काम कर रहे हैं वे इस योग्यता के अन्तर्गत आते नहीं हैं और जब वे इस योग्यता के अन्तर्गत नहीं आते हैं तो तो फिर उनसे काम कैसे लिया जा रहा है ?

श्री भोगीलाल पंड्या—सर्विस के टाइम तो इसमें नहीं आते थे ?

श्री चांदमल मेहता— तो फिर उनको चालू रखने के क्या कारण हैं ?

श्री भोगीलाल पंड्या— जब रिक्वायर्ड क्वालीफिकेशन के आदमी नहीं मिलते हैं तो जो लोग हैं उनसे ही काम लिया जावे।

श्री चांदमल मेहता— क्या यह सही है कि उनमे ज्यादा योग्यतावाले मौजूद थे लेकिन नहीं लिये गये ?

श्री भोगीलाल पंड्या—यह ठीक नहीं है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—वे लोग योग्य थे या नहीं इसका निर्णय किसने लिया, पब्लिक सर्विस कमिशन ने या सरकार ने ?

श्री भोगीलाल पंड्या— इसका निर्णय सरकार ने लिया ?

श्री हरिकृष्ण व्यास — क्या यह सही है की पी.एस.सी.के पास आवेदन-पत्र आने के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया ?

श्री भोगीलाल पंड्या— हां, यह ठीक है ?

श्री हरिकृष्ण व्यास— यदि यह ठीक है तो सरकार ने इस निर्णय को पब्लिक सर्विस कमिशन पर न छोड़ कर खुद ने क्यों लिया ?

श्री भोगीलाल पंड्या— बात-चीत की तो पता लगा कि जिस क्वालिफिकेशन के आदमी भी नहीं मिले तो सरकार ने यह डिसिज़न लिया।

श्री हरिकृष्ण व्यास— यह पब्लिक सर्विस कमिशन का निर्णय नहीं था। सरकार ने इस संबन्ध में पब्लिक सर्विस कमिशन को आगे बढ़ने से रोकने का कार्य क्यों किया ?

श्री भोगीलाल पंड्या— गवर्नमेंट ने भेजा था। लेकिन जब योग्य व्यक्ति नहीं मिलते तो दूसरे रखे जा सकते हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—आपने जो क्वालीफिकेशन्स प्रिस्काइव्ड की थीं और जिसके आधार पर पब्लिक सर्विस कमिशन ने नोटिफिकेशन निकाला था उसके बारे में आपने भारत सरकार से परामर्श कर ली थी ?

श्री भोगीलाल पंड्या—भारत सरकार से पूछा गया था।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या पब्लिक सर्विस कमिशन ने भारत सरकार को यह सूचना दी कि नोटिफिकेशन के मुताबिक आवेदनपत्र नहीं आये हैं ?

श्री भोगीलाल पंड्या—सरकार ने सूचना नहीं मांगी।

श्री हरिकृष्ण व्यास—पब्लिक सर्विस कमिशन के इस प्रश्न पर विचार करने के पहले ही सरकार ने दस्तन्दाजी क्यों की ?

श्री भोगीलाल पंड्या—यह मामला पूरा पूरा सरकार के ध्यान में नहीं लाया गया, बाद में लाया गया। इस लिये यह ठीक समझा गया कि जो लोग हैं उनसे काम लिया जावे और बाद में देखा जावेगा।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या यह सही है कि इसको इस बिनह पर रखा है कि जितनी क्वालीफीकेशन पहले रखी गई थी उसमें से कुछ कम करके फिरसे नोटिफिकेशन निकाला जावेगा; जिसमें सर्विस कन्डीशन २० साल या १५ साल है उसको कम करके दिया जावेगा, क्या ऐसा सरकार का इरादा है।

श्री भोगीलाल पंड्या—हो सकता है कि जब योग्यता वाले व्यक्ति न मिले तो ऐसा किया जा सकता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—अभी जो एप्लीकेशन्स आई हैं उसमें पब्लिक सर्विस कमिशन की राय जानने में सरकार को क्या ऐतराज है ?

Why the Goverment is not prepared to leave it to the P.S.C. ?

श्री भोगीलाल पंड्या—मैं पहले बता चुका हूँ कि जिस प्रकार के आदमी की जरूरत होती है, मांग करते है और जब आदमी नहीं मिलता है तो जो मिलता है उसको रखना होता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—आपको जिस प्रकार के आदमी की आवश्यकता थी आपने उसकी क्वालीफिकेशन के बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन द्वारा नोटिफिकेशन शाया करा दिया, मगर इस प्रश्न के निर्णय को पब्लिक सर्विस कमिशन पर ही क्यों नहीं छोड़ा गया ?

श्री भोगीलाल पंड्या—जब ऐसा आदमी नहीं मिलता जिसकी मांग की जाती है तो सरकार को अधिकार है कि वह दस्तन्दाजी करे ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—यदि पब्लिक सर्विस कमिशन यह कह दे कि इस प्रकार की योग्यता के व्यक्ति नहीं मिल रहे हैं तो सरकार दुबारा ध्यान दे सकती है, लेकिन पब्लिक सर्विस कमिशन ने अपनी कोई राय नहीं दी और इसके पहले ही कोई नया कदम उठाना, यह तो एक पक्षपात की बात है।

श्री अध्यक्ष—यह बहस शुरू हो गई क्या ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री)—बहस के लिये अभी बहुत समय है। माननीय सदस्य इस बात को समझ कर चलें कि पब्लिक सर्विस कमिशन के जरिये जो....

('आवाज नहीं सुनाई दे रही है' की सदन में आवाज)

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—मैं यह निवेदन कर रहा था कि पब्लिक सर्विस कमिशन के जरिये ही फाइनल सिलेक्शन होगा, यह आप विश्वास करके चलें और योग्यता भी वही रखी जावेगी जो आम तौर से सब जगह रखी जाती है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—इसमें और उलझन पड़ गई साहब।

(घंटी)

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या यह सही है कि जो योग्यता शाया की गई है वह Central Institute of Mining से पूछ कर वैसी की वैसी शाया की गई है ? Is it a fact that the present qualifications have been prescribed after consultation with the central Institute of Mining and ditto and word to word what they suggested has been incorporated in the notification ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—मैं समझता हूं कि जिसके जरिए आप जानना चाहते हैं तो पूरी जानकारी करके बताई जा सकती है। ऐसा इरादा गवर्नमेंट का नहीं है कि ऐसी क्वालीफिकेशन्स रखे जो दूसरी जगह हिन्दुस्तान में नहीं होती हैं।

श्री तेजमल बापना—यह आवेदन-पत्र पब्लिक सर्विस कमिशन ने कॉल किये या गवर्नमेंट ने कॉल किये थे ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—इसकी जांच कराई जावे साहब।

श्री रामदयाल उपाध्याय—एप्लीकेशन्स पब्लिक सर्विस कमीशन ने काल कीं और गवर्नमेंट ने डिसिज़न लिया।

श्री भोगीलाल पंड्या—अभी डिसिजन नहीं लिया गया है।

श्री अध्यक्ष—अभी तक कोई डिसिशन नहीं लिया गया है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—यह कब तक पूरा हो जावेगा ?

श्री अध्यक्ष—जल्दी ही हो जावेगा।

श्री हरिकृष्ण व्यास—चार-पांच साल तो हो गये हैं।

श्री अध्यक्ष—एक साल रह गया है।

(श्री हरिकृष्ण व्यास के पुनः खड़े होने पर)

ऑर्डर ! ऑर्डर प्लीज !! जवाब दे रहे हैं।

श्री भोगीलाल पंड्या—काम अभी चल रहा है, ज्योंही उपयुक्त आदमी मिल जावेगा रख लिया जावेगा। इसके लिए कोशिश हो रही है।

श्री मानसिंह महार................

(घंटी)

कुं० श्री जसवन्तसिंह—ओन ए पोइन्ट ऑफ ऑर्डर, सर, नया वाच एण्ड वार्ड का आदमी वगैर युनिफोर्म का रखा गया है क्या ? House में seat है क्या ?

माननीय मावलंकर आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ० मेघनाथ शाह व मुकर्जी के प्रति श्रद्धांजलियें

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मन्त्री)—अध्यक्ष महोदय, हम पिछले अधिवेशन में मिले और आज जब इस अधिवेशन में विचार करने के लिए मिले हैं, इस बीच में दुर्भाग्य से हमारे देश में तीन महत्वपूर्ण सम्माननीय व्यक्तियों की मृत्यु हुई और उनके देहावसान के कारण सारे देश के अन्दर शोक मनाया गया। माननीय मावलंकर के देहावसान का समाचार कुछ ही दिनों पहले हमें प्राप्त हुआ था। श्री मावलंकर एक इस प्रकार के व्यक्ति रहे हैं कि जिन्होंने हमारे देश के अन्दर स्पीकर की तरह सर्वोच्च शक्ति ही प्राप्त नहीं की लेकिन दूसरे देशों में भी उनकी निष्पक्षता और सेवा-भावना की कद्र काफी प्रसिद्ध थी।

वे न केवल पार्लियामेंट के अध्यक्ष ही थे बल्कि अपने जीवन के अन्दर उन्होंने काफी सेवायें कीं, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के संग्राम में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। उसके बाद गांधी निधि का जो रचनात्मक कार्य देश के अन्दर चलता है उसके संचालन में सक्रिय रूप से, अस्वस्थ होते हुए भी, बराबर दिलचस्पी लेते रहे थे और उस कार्य का संचालन करते थे। स्वभाव से वे काफी सादे और सरल प्रकृति के थे और मैं समझता हूं कि उन्होने देश के लिए बहुत सी स्वस्थ परम्परायें जनतन्त्र के संचालन के लिए पार्लियामेंट में कायम कीं। आज उनका स्थान कोई पूरा कर सके तत्काल देश में, यह दिखाई नहीं देता है। परमात्मा के आगे किसी का जोर चलता नहीं है। जो उन्होंने देश को देन दी वह सदा याद रहेगी। वे आज हमें आगे गाइड करने के लिए, मार्ग दर्शन

[श्री मोहनलाल सुखाड़िया]

करने के लिए हमारे बीच नहीं रहे; तो मैं सर्व प्रथम उनके प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय !

उसके बाद, हमने यह सुना कि देश के अन्दर आचार्य नरेन्द्रदेव भी न रहे। आचार्य नरेन्द्रदेव देश के क्रान्तिकारी नेता रहे। वे न केवल क्रान्तिकारी विचारक रहे बल्कि उन्होंने जीवन में देश को एक क्रान्ति का दृष्टिकोण भी दिया। वे बहुत स्पष्ट विचारक थे और देश की प्रगति के लिए उनके दिल में सदैव एक प्रबल इच्छा रहती थी। यहां तक कि मैंने स्वयं, अध्यक्ष महोदय और बहुत से हमारे माननीय सदस्यों ने देखा जब पिछले कुछ महीनों पहले वह यहां पर रह रहे थे। उनको बहुत जोरों का दमा रहता था। ओक्सीजन पर उनको रखना पड़ता था, तब भी उस वक्त उनका दिमाग देश के लिए विचार करता रहता था। वे समाजवादी विचारों के थे; देश आगे बढ़े, ये सदैव विचार उनके समक्ष रहे थे। वे बहुत बड़े दार्शनिक थे। इस प्रकार के आदमी को इस अवसर पर जब कि हमारे देश को उनकी आवश्यकता थी, लेकिन जो भयंकर बीमारी कई वर्षों से उनको लगी हुई थी, वह उनको हमारे बीच से छीन कर ले गई। तो अध्यक्ष महोदय, उनके प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करना हम सब के लिए उपयुक्त होगा और मैं अपनी तरफ से उन्हें श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं।

तीसरे इस वर्ष के बीच में श्री मेघनाथ शाह जो हमारे देश के बहुत बड़े वैज्ञानिक हुए हैं; जिन्होंने देश के अन्दर, काम करने के अन्दर, विचारों के अन्दर, विज्ञान के अन्दर अपने जीवन-काल में काफी सेवाएँ की हैं। उनकी जो अचानक मृत्यु हुई, जिसको सुन कर भरोसा नहीं होता था, लेकिन यह सत्य घटना थी जिसके बारे में पता लगने पर काफी शोक छाया और इससे काफी लोगों को आघात पहुंचा। आज वे भी हमारे बीच नहीं हैं।

इन तीनों महान् आत्माओं के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करता हूँ और मैं समझता हूँ अध्यक्ष महोदय, कि इसके साथ साथ यह भी निवेदन करूं तब भी उचित होगा कि हम जब इन तीन महानुभावों और उनके साथ साथ अगर मैं यह भी जोड़ दूं तो गलत नहीं होगा कि हमारे भारत के एक्स चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया, श्री मुकर्जी का भी देहावसान इसी अर्से के बीच में हुआ है, उनको साथ में जोड़कर यह सदन उनके प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करने के बाद उनकी रेस्पेक्ट में आज हम अपनी कार्यवाही को स्थगित करदें।

कु० श्री जसवन्तसिंह—(विरोधी दल के नेता) माननीय अध्यक्ष, तीन महान् विभूतियों को माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो श्रद्धान्जली अर्पित की और बाद में एक और विभूति का भी नाम जोडा है, इस तरह से कुल विभूतियां हुई हैं। उस श्रद्धांजली में विपक्ष की ओर से मैं सम्मिलित होना चाहता हूँ। आपने इन महान् चार विभूतियों के प्रति बहुत कुछ कहा जिसको दोहराना मैं इस वक्त में उपयुक्त नहीं समझता हूं। मैं सिर्फ श्री मावलंकरजी के मुतल्लिक इतना ही कहना चाहूंगा कि उनके अध्यक्ष-काल में, लोक सभा की अध्यक्षता के काल में मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था कि मैं लोक सभा का एक सदस्य था और अपने खुद के अनुभव से कह सकता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने उनकी लोकप्रियता, निर्भीकता और निष्पक्षता के मुतल्लिक जो शब्द कहे हैं वे

[श्री जसवन्तसिंह]

बिलकुल यथार्थ और सत्य हैं। अध्यक्षता के पद को ऊंचा स्थान श्री मावलंकरजी ने जो दिया वह भारत के लिए एक महान् परम्परा बन गई। आज उनके हमारे बीच में नहीं रहने से भारत के अन्दर से एक महान् शक्ति निकल गई है। इन शब्दों के साथ इन विभूतियों के प्रति श्रद्धान्जली में विरोधी पक्ष की ओर से सम्मिलित होते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इन महान् आत्माओं को शान्ति प्रदान करे।

श्री जयनारायण व्यास—अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता और विरोधी पक्ष के नेता, दोनों ने दिवंगत आत्माओं के स्वर्गवास पर जो भावनायें व्यक्त की है मैं सदन के एक सदस्य के नाते उन भावनाओं के साथ अपनी भावना भी मिलाना चाहता हूँ और मैं आशा करता हूं कि जो भावनाएं मैं व्यक्त कर रहा हूं, वे न सिर्फ मेरी व्यक्तिगत होंगी बल्कि सदन की भी होगी, न सिर्फ एक पार्टी की होगी बल्कि सभी पार्टियों की होगी। विरोधी पक्ष के नेता की भांति मुझे भी स्वर्गीय श्री मावलंकर जी के साथ सैंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली और पार्लियामेंट दोनों में काम करने का मौका मिला है। मैं उनके व्यक्तिगत जीवन से भी थोड़ा बहुत परिचित हूं और मुझे उनसे मिलने जुलने का भी काफी अवसर मिला है। इस हिसाब से जैसा मेरे अध्ययन से है मैं यह कह सकता हूं कि मावलंकरजी एक कुशल वकील थे। जब वे वकालत करते थे, उन्होंने अपनी कुशलता का बहुत ही अच्छा परिचय दिया था और इस वजह से उनको बम्बई में स्पीकर के तौर पर बुलाना पड़ा था और वहां उन्होंने जो ख्याति प्राप्त की उसके परिणाम स्वरूप भारत में जो ऊंची कुर्सी है, कम से कम सदन में, उस पर वे बैठे। वे केवल वकील ही नहीं थे, उनमें और भी गुण थे। उनकी प्रवृत्तियां और भी विशाल थीं। वकील की प्रवृति तो एक व्यक्तिगत प्रवृति हो जाती है लेकिन वे एक समाज-सेवक थे। समाज सेवा के सभी क्षेत्रों में उनका हाथ रहा था। आखिरी बार हिन्दी आयोग के सिलसिले में मुझे उनके दर्शन करने का मौका मिला था। उस सिलसिले में सांस्कृतिक प्रोग्राम बना था उसमें भी उनका हाथ था। समाज संगठन में उन्होंने सक्रिय सहयोग दिया था। वे सभी क्षेत्रों के लोगों को मिलाने-जुलाने और आपस में रखने के एक प्रतीक थे। वे बिमार थे, जिसकी वजह से, मैं कह सकता हूँ कि गुजरातियों और महाराष्ट्रियों के झगड़े हो सके हैं, वे जानते थे। वे अगर स्वस्थ होते तो शायद बहुत काम कर पाते। वे स्वयं गुजरातियों और महाराष्ट्रियों की एकता के प्रतीक थे। अहमदाबाद में रहते थे, महाराष्ट्रियन थे, गुजराती सुन्दर बोलते थे। कभी लोग उनको गुजराती महाराष्ट्री कहते थे, कभी उनको महाराष्ट्री गुजराती कहते थे, लेकिन न वे गुजराती-महाराष्ट्री थे, और न वे महाराष्ट्री गुजराती थे, और न ही वे गुजराती थे और न ही वे महाराष्ट्री थे लेकिन वे भारतीय थे, शुद्ध भारतीय थे और सदैव भारतीय भावनाओं से अपना काम किया करते थे। उन्हें स्वदेशी संस्कृति से प्रेम था। बहुत शान्तिप्रिय होते हुए भी उन्हें शास्त्रास्त्र से सदैव प्रेम था क्योंकि आत्म रक्षा के लायक हमें होना चाहिए। यही हमारी प्रवृति रहे। राइफल क्लब ऑफ इंडिया उन्हीं की देन है। उन्ही की वजह से राइफल क्लब इतना ख्याति प्राप्त कर सका और इतना आगे बढ़ सका।

वे एक बड़े निर्माता थे, जैसा कि सदन के नेता ने बताया। वे गांधी निधि के संचालक थे। स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी वे इसका सुचारू रूप से संचालन करते रहे।

[श्री जयनारायण व्यास]

उनका सार्वजनिक जीवन भी बड़ा महत्वपूर्ण था। वे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन अहमदाबाद के चेयरमेन रहे। उनके काल के पहिले वहाँ की म्युनिसिपैलिटी की हालत, सड़कों की जो हालत थी तथा बाद में मकानों की हालत और वाटर वर्क्स की हालत में जो सुधार हुआ आज उसको देखते हैं तो सब यह कहते हैं कि जो कुछ भी अहमदाबाद में स्वच्छता और सुन्दर मकानों का निर्माण हुआ वह सब मावलंकरजी की ही देन है।

एक पार्लियामेन्टेरियन और स्पीकर के तौर पर जो कार्य इन्होंने किये, अध्यक्ष महोदय, इसके बारे में आपको ज्यादा अनुभव होगा। वे न सिर्फ भारत के ही प्रख्यात स्पीकर थे किन्तु उनकी एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति थी। वे जब कभी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों में भेजे जाते थे तो उनका वहां बड़ा सम्मान होता था, जैसा कि हमें समाचार-पत्रों से समय-समय पर विदित होता रहा है। मावलंकर जी के निधन से मैं यह समझता हूँ भारत को एक महान् क्षति पहुँची है। उस क्षति की पूर्ति हो सके, यह मुझे प्रतीत नहीं होता। सदन के नेता ने जो संवेदना मृत आत्मा के प्रति प्रदर्शित की है और विरोधी दल के नेता ने जो भावनायें प्रकट की हैं, उनकी भावनाओं के साथ मैं अपनी भावना भी प्रगट करता हूँ।

आचार्य नरेन्द्रदेवजी से विशेष संबन्ध मेरा उस समय हुआ था जब कि वे समाजवादी कार्यकर्ताओं के शिक्षण केम्प के प्रोग्राम के सिलसिले में यहां आये थे और अचानक बीमार हो गये। मुझे इस बात का सौभाग्य रहा कि वे मेरे पड़ोस में ही रहे और उनके दर्शनों का मुझे मौका मिला। हालाँकि वे कांग्रेस से अलग हो गये और इस वर्ग में चले गये, लेकिन जो उनकी आत्मीयता थी, उसमें न पार्टी, न ग्रूप और न वर्ग, कभी किसी चीज से रुकावट नहीं आई। वे एक राजनैतिक विचार वाले व्यक्ति थे। उनके जब यह दिमाग में आया कि अब कांग्रेस में रह कर वे कार्य नहीं कर सकते तो उन्होंने उसको छोड़ दिया। कांग्रेस को छोडने के साथ साथ उनकी जो आत्मीयता उनके साथियों के साथ थी वह कभी छुट नहीं पायी। यह दुर्भाग्य है कि ऐसा विद्वान् और शिक्षा शास्त्री इस देश से चला गया। वे जिस किसी भी कॉन्फ्रेन्स में बोलते थे; चाहे उर्दू हो, चाहे हिन्दी हो सबमें धारा प्रवाह उनका भाषण होता था। वे अंग्रेजी में भी उसी प्रकार बोलते थे जैसे हिन्दी और उर्दू में। इस तरह से एक विद्वान और शिक्षा-प्रेमी की मृत्यु से भारत को महान क्षति पहुँची है।

श्री मेघनाथ साहब के बारे में मैं जितनी भी जानकारी हासिल कर सका उसके अनुसार मैं यह कह सकता हूँ कि उनका एक ऐसा रिसर्च है वह दुनियां में अपनी शानी का एक ही है। उनसे भी मुझे एक-दो बार मिलने का मौका मिला। जो रिसर्च उन्होंने किया वैसा रिसर्च कोई भी देश नहीं कर पाया। उनके कार्य पर जो रिसर्च कर रहे हैं उनको बाद में पता चलेगा कि उनकी रिसर्च भारत को एक महान देन थी।

मैं एक बार अन्त में यह और प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इन दिवंगत आत्माओं को ईश्वर शान्ति प्रदान करें।

मैं मुकर्जी के बारे मे इतना ही कह सकता हूँ, इनसे भी मुझे एक बार मिलने का मौका

[श्री जयनारायण व्यास]

मिला, व्यक्तिगत रूप से मिलने का मौका मिला। वे बड़े विद्वान थे। उनकी क्षति भी भारत की एक बड़ी क्षति है।

इन शब्दों के साथ में अध्यक्ष महोदय, आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इन मृतआत्माओं के कुटुम्बियों को सदन की तरफ से न केवल संवेदना संदेश ही भेजे जायँ बल्कि सच्चे हृदय से लोग उनके प्रति संवेदना प्रगट करते हैं। मैं यह निवेदन कर अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

डॉ० श्री मंगलसिंह—अध्यक्ष महोदय, आज हमारे नेता ने जो बात कही है हम सभी पूर्णतया सहमत हैं। इस अरसे में चार विभूतियां इस देश से चली गईं और ऐसा मालूम होता है कि इन दिनों में इनकी पूर्ति करना कठिन है।

मावलंकरजी जो संसद के अध्यक्ष रहे मैं समझता हूँ कि हमारे देश में तो क्या, इस प्रकार के व्यक्ति दूसरे देशों में भी नहीं हैं। उनके बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह शायद बहुत कुछ कम है, उनके और गुणों को देखते हुए। इन चारों विभूतियों में अपने-अपने क्षेत्र में एक से एक उत्तम रहे हैं। डा० मेघनाथ शाह उच्चतम कोटि के वैज्ञानिक थे। मेरा सम्पर्क आचार्य नरेन्द्रदेवजी से बहुत घनिष्ठतम रहा है। उनके सम्बन्ध में जो बातें सदन में कही गईं तो मेरे भी मन में हुआ कि मैं भी उनमें कुछ योग दूँ।उनका और मेरा परिचय लगभग २५-३० वर्ष से रहा। सन् ३४ में जब कि सोशलिस्ट पार्टी बनने का विचार शुरू हुआ उसके दो वर्ष पहले से ही यह विचार चल रहा था। श्री जयप्रकाशनारायणजी और उनके अन्य साथियों की धारणा बन गई थी कि अब उनका निर्वाह कांग्रेस में नहीं हो सकता, उससे जुदा होकर ही हम कुछ कार्य कर सकते हैं और लगभग दो वर्ष तक नवयुवकों में इस बात की कोशिश होती रही कि वे अलग पार्टी बनायें। लेकिन उस समय पार्टी न बनने का कारण एक ओर महात्माजी थे और दूसरी ओर आचार्य नरेन्द्रदेवजी थे। ये ही उस विभाजन को रोकने की कोशिश करते रहे। इस प्रकार दूसरी पार्टी नहीं बनने का कारण एक ओर तो महात्माजी थे और दूसरी ओर आचार्य नरेन्द्रदेव; ये दोनों ही महानुभाव नवयुवकों को रोकते रहे, लेकिन सन् ३४ में यह बात इतनी बढ़ गई कि उनको रोकना असंभव हो गया, उन लोगों के लिये कांग्रेस में करना असम्भव हो गया और वे कांग्रेस से निकल गये। फिर भी आचार्यजी के जो साथी थे वे उनको अपना साथी ही समझते रहे। अलहदा होकर काम करना ही ठीक है, जो इस विचार धारा के थे वे अलग निकलने लगे और कांग्रेस में न रहे। उन लोगों के मन में खेद था। वे अपने आप नहीं जाना चाहते थे। ऑल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने यह प्रस्ताव पास कर लिया कि कांग्रेस के अन्दर दूसरी विचार-धारा के लोग नहीं रह सकते। जब इस प्रकार का प्रतिबन्ध लगा दिया गया, तब सोशलिस्ट पार्टी का बनना आवश्यक और अनिवार्य समझा गया, तब इस पार्टी का निर्माण हुआ।

सोश्यलिस्ट पार्टी के बनने से पूर्व की आचार्यजी की एक बात मुझे याद है। जब सन् ३२ में असहयोग आन्दोलन चल रहा था, यू. पी. के अन्दर, जब बाहर से आर्थिक सहायता आना बन्द होगया, जब आर्थिक कठिनाई कार्यकर्ताओं पर आ पड़ी तो उस समय आचार्य जी और मैं

[डॉ० श्री मंगलसिंह]

बाबू श्रीप्रकाश जी, मिलकर मालवीयजी महाराज के पास गये और उनसे कहा कि वे हमारी आर्थिक कठिनाई दूर करें। मालवीय जी ने कहा कि मेरा मकान जो इलाहाबाद में है उसको बेच दो या बंधक रख दो। इस बात को सुनकर आचार्यजी निस्तब्ध रह गये, वे उठ कर चले गये और उन्होंने कहा कि वह यह सुनने में असमर्थ हैं। वैसे तो यह बात दिखने में छोटी सी थी, लेकिन आचार्यजी ने यह कहा कि मालवीयजी का मकान एक ही है और वे भी उसके बेचने को कहते हैं यह उनसे बर्दाश्त नहीं हो सका। फिर उन्होंने आर्थिक कठिनाई के निवारण का दूसरा उपाय निकाला और अन्त में आर्थिक कठिनइायां दूर करने नें कामयाब हुए। यह एक छोटी सी बात है। इससे यह पता चलता है कि आचार्यजी इस छोटी सी बात से किस प्रकार प्रभावित और विह्वल हो गये। उत्तर प्रदेश के जितने भी बड़े बड़े नेता हैं, प्रधान मंत्री को लेकर भी, मैं यह कह सकता हूँ कि आचार्यजी के अन्दर जो कुछ विशेष गुण थे, प्राइम मिनिस्टर और दूसरे लोगों में उनसे भी विशेष गुण हो सकते हैं, किन्तु जो कुछ गुण आचार्यजी में थे वे गुण उस प्रान्त के किसी भी नेता में उतनी मात्रा में नहीं पाये जाते।

एक बात उनमें और विशेष थी कि वे किसी भी पद के नजदीक अपनी जिन्दगी में नहीं गये, नहीं चाहा। आज मैं एक बात आपके सामने कह सकता हूँ, उसमें कोई भेद खोलने की बात नहीं। मैं यह कह सकता हूँ कि उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्रित्व उनके सामने रख दिया गया, लेकिन उन्होंने यह पद लेने से इन्कार कर दिया और उनकी इन्कारी के बाद यह पद दूसरों को मिला।

कई बार उनको महात्मा गांधी ने कांग्रेस का अध्यक्ष पद स्वीकार करने की बात कही किन्तु वे यह सुनकर संकुचित हो गये और वे यह कहते रहे कि मैं इस पद को स्वीकार नहीं करूंगा।

इस प्रकार से एक बार नहीं, कई बार वे मौका आने पर खुद आगे नहीं आये और अपने साथियों को आगे बढ़ाने की उनकी इच्छा रही। पार्टी में भी पार्टी के निर्माता और उसके प्राण होते हुए भी कभी आगे अपने आपको नहीं रक्खा, जयप्रकाश बाबू को आगे किया अथवा किसी दूसरे मित्र को आगे बढ़ाया। इसी में उन्होंने सदा सुख का अनुभव किया हांला कि समाजवादी पार्टी के वे वास्तविक जन्मदाता थे। यह उनमें बड़ा गुण था कि अपने साथियों को, छोटों को आगे बढ़ाना और उनको सलाह देकर ऊंचा पद दिलवाना। यह आचार्यजी की एक विशेषता थी।

एक बार का किस्सा है, ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में मैं भी गया। वहां महात्मा गांधी भी थे और बहुत से अन्य वक्ता भी। गांधीजी का स्वभाव कि चर्खा चलाते रहते थे और लोग बोलते चले जाते थे। गांधीजी के चर्खे की आवाज में वे सब समा जाते थे। पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब आचार्यजी बोलने को खड़े हुए तो गांधीजी का चर्खा चलना बन्द हो गया और गांधीजी भी गौर से उनकी वक्तृता सुनने लगे। लोगों ने बापू से पूछा, "बापू

[डा० मंगलसिंह]

ऐसी क्या बात है, आपने चर्खा चलाना क्यों बन्द कर दिया ? "गांधीजी ने कहा, "आचार्य जी बोल रहे हैं।" तो कहने का मेरा अभिप्राय यह है कि उनके बोलने की शैली, उनकी भाषा और उनके भाव ऐसे होते थे जैसे कोई निर्मल झरना अन्दर से बहता हुआ चला जा रहा हो। चाहे अंग्रेजी में वे बोलें, चाहे उर्दू में; उर्दू बोलते तो ऐसी लताफत की उर्दू बोलते कि सुनने वाले को मजा आ जाता था। भाव, भाषा, और शैली तीनों बातों में कमाल था और जो अब हिन्दी बोलते तो क्या मीठी धारा का प्रभाव होता था और जिस वक्त अंग्रेजी बोलते थे धारा प्रवाह रुप में तो बरबस सुनने वाला उधर ही आकर्षित हो जाता था।

इसके अलावा वे और भी दुनिया की पांच भाषाएं अच्छी तरह से जानते थे। बौद्ध सत धर्म का अभिधर्म कोष एक ग्रन्थ है; इतना ही महत्व पूर्ण जैसा हमारे यहां गीता। उसका अनुवाद और भाष्य चार भागों में एक एक भाग दो दो ढाई,ढाई सौ पेज का जो चाइनीज़ भाषा से फ्रैन्च भाषा में ट्रान्सलेशन हुआ था उस फ्रैन्च ट्रान्सलेशन से उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में लगभग दस हजार पृष्ठ के उस ग्रन्थ का अनुवाद कर दिया। इतने बड़े वे फ्रैन्च के ज्ञाता थे और फ्रैन्च पढ़ी भी उन्होंने इसलिये कि बौद्ध धर्म का जो साहित्य उसमें है उसका रसास्वादन वे करें। बौद्ध देशों से, चीन से, जापान से, लंका आदि दूर दूर देशों से बौध भिक्षुक उनके पास पढने आया करते थे।

वे जर्मन भाषा के भी एक बड़े अच्छे ज्ञाता थे। इसके अलावा और भी बहुत सी भाषाओं का उनको ज्ञान था। तो ऐसे आदमी का उठ जाना हमारे लिए एक महान् दुर्भाग्य और देश की महान् क्षति है।

विदेशों में वे अधिक नहीं रहे। अभी पिछले दिनों में वे रूस इगलैंड आदि देशों में गये थे और चीन में भी गये थे। पर राष्ट्र नीति उनके इतने स्पष्ट और सुलझे हुए विचार थे कि पंडितजी को भी आवश्यकता होती थी तो उनसे विशेष रूप से सलाह किया करते थे। तो ऐसा पुरुष, ऐसे समय में जब देश के अन्दर छोटी-छोटी बातों पर; जैसे बम्बई में झगड़े हो रहे हैं, और जगह हो रहे हैं या हो गये हैं, न रहा तो यह देश का बडा दुर्भाग्य ही समझना चाहिये। इन झगडों की खबरों को सुनकर उनको बड़ा दुख हुआ था और उनके निधन का विशेष कारण बना। पिछले दिनों जब वे जयपुर आये और यहां बीमार हो गये और डाक्टरों ने यह कह दिया कि उनको थाइसिस हो गई है; उस समय जब मैं आचार्य जी के पास गया तो वे इन्हीं सब दुखों के भार से दुखी होकर कह रहे थे कि चलो अच्छा है, अब रास्ता कम हो गया। फिर जब लखनऊ गये और वहां के डाक्टरों ने देखकर कहा कि थाइसिस नहीं है तब भी कोई खास बात उनके लिए नहीं थी। उसके बाद फिर जब दमा ने जोर मारा और बिस्तर पकड लिया तब भी उनकी सबसे बडी चिन्ता देश की चिन्ता थी। इससे वे अहर्निश चिन्तित रहते थे। कहते थे, भाई देखो देश की हालत ऐसी है, वैसी है, क्या होगा; ऐसी बातें वे करते थे। हम कहते, आपको इसकी चिन्ता छोड़नी चाहिये। काजी क्यों दुबला, शहर के अन्देश से। अपने आपको दुबला मत करो, पहले आप अपनी बीमारी दूर करिये। तो बडी कसक से कहते कि यह स्वतन्त्रता बडी मेहनत त्याग और

[डा० श्री मंगलसिंह]

बड़े बलिदानों और बड़ी गुलामी भुगतने के बाद हमें मिली है। देश की प्रगति होनी आवश्यक है। टिप्पणी करना सहज है। लेकिन देश का नुकसान कदापि नहीं करना चाहिये। क्रिटिसाइज देश के हित में हो तो ही उचित है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि देश के हित के लिए, देश की समृद्धि के लिए जिस महा पुरुष को अपने स्वास्थ्य से भी अधिक चिन्ता दिन रात सता रही थी, उस महान् व्यक्ति के चले जाने से किसको शोक न होगा। हमारे लीडर ने और अपोजीशन के लीडर ने उनको श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए जो भाव व्यक्त किये हैं मैं अपने आपको भी उसमें सम्मिलित करता हूँ और दिवंगत आत्माओं को श्रद्धान्जलि भेंट करता हूँ।

श्री उपाध्यक्ष—माननीय अध्यक्ष, मैं भी दो शब्द अपनी श्रद्धांजलि के रूप में भेंट करने के लिए प्रस्तुत हुआ हूँ। पिछली प्रिसाइडिंग ऑफीसर्स कोन्फ्रेंस के अवसर पर मेरा मावलंकरजी से सम्पर्क हुआ और उस अवसर पर देश के सभी स्पीकरों की कान्फ्रेंस में प्रिसाइड करते हुए जो वाद-विवाद का संचालन करने की उनकी कुशलता थी और जिस दक्षता के साथ उस कार्यवाही का संचालन करते थे, उसका सब पर भी एक अपूर्व प्रभाव पड़ता था। कोई भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था, एक निष्पक्षता और अति सूक्ष्म दृष्टि हमें वहां दिखलाई पड़ती थी।

इसके अलावा भी हमें उनको जब देखने का अवसर मिला तो उसमें भी उनके व्यक्तित्व का बड़ा भारी प्रभाव हमारे दिलों पर पड़ता था। राष्ट्र निर्माणकारी जो महान् व्यक्ति हमारे देश में हुए, उनमें उनका भी एक मुख्य स्थान रहा है और हम लोग जो उनके किंचित् भी सम्पर्क में आये उनकी बातें सुनकर हमें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वे हमारे परिवार के ही कोई व्यक्ति हैं। यही कारण है कि उनके देहावसान का समाचार सुनते ही हमें ऐसा लगा कि हमारे परिवार का ही एक बुजुर्ग सदस्य चल बसा है। आप देखेंगे कि कितने थोड़े समय में ही उस विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति ने कितने सारे दिलों को जीत लिया और अपनी निष्पक्षता और लोकप्रियता की छाप हम पर छोड़ गये। उनके निधन से हमारे देश को अपार क्षति हुई है और दूसरे महान् व्यक्ति जिनका जिक्र किया गया, उनके सभी के जाने से देश का बड़ा नुकसान हुआ है। मेरी व्यक्तिगत जानकारी केवल इन्हीं से थी, इस वास्ते मैंने जिक्र किया। अन्त में मेरी यही प्रार्थना है कि भगवान दिवंगत आत्माओं को शान्ति दे और इन शब्दों के साथ में अपनी विनम्र श्रद्धांजलि उनको भेंट करता हूँ।

श्री अध्यक्ष—जिन चार महानुभावों के दुखद अवसान के ऊपर जो उद्गार सदन के नेता और अन्य सदस्यों ने प्रकट किये हैं मैं इस सदन की ओर से और अपनी ओर से उन भावनाओं में सम्मिलित होता हूँ। ये चारों महापुरुष भारतवर्ष के रत्न थे। जिन संसदीय परम्पराओं को हम स्थापित करने जा रहे हैं अपने इस गणतन्त्र के शैशव काल में, श्री गणेश

[श्री अध्यक्ष]

वासुदेव मावलंकर, लोक सभा के अध्यक्ष, उसके बड़े भारी हामी थे। इस विधान सभा के प्रारम्भ से, स्थापित होने से और समय समय पर जो गतिविधियां यहां होती आई हैं उनमें वह निरन्तर जानकारी ही नहीं रखते थे किन्तु दिलचस्पी रखते थे, और इस बात के लिए हमेशा जागरूक रहते थे कि किसी भी प्रकार हमारा यह गणतन्त्र का शैशव काल सुदृढ़ और मजबूत नींव पर आधारित हो। वे न केवल भारतवर्ष में ही विख्यात थे अपनी इन संसदीय परम्पराओं के कारण, किन्तु जैसा कि सदन के नेता ने बताया उनकी अन्तर्राष्ट्रीय संसद के अन्दर बड़ी भारी ख्याति थी। इसी वर्ष जमेका में अन्तर्राष्ट्रीय संसदीय परिषद हुई थी, उसका अध्यक्ष उनको निर्वाचित किया गया था। इसी से आप लोग यह अनुमान कर सकते हैं कि जितनी देश-विदेश की पार्लियमेन्ट्स हैं संसदे हैं, उनके अध्यक्षों के अन्तर्गत उनका बड़ा भारी सम्मान था। हमें विशेष दुःख इस बात का है कि पिछले साल शिलोंग के अन्दर कॉन्फ्रेंस में उन्होंने मुझसे यह कहा था कि मैं संसद के कार्यकाल के अन्दर लोक सभा के उम्मीदवार की हैसियत से खड़ा नहीं होना चाहता और राजनीति से अवकाश ग्रहण कर रहा हूं; इसलिए मेरी यह इच्छा है कि इस बार जो प्रिसाइडिंग ऑफिसर्स कांफ्रेंस हो वह जयपुर में रखी जाय। मैंने उसको सहर्ष स्वीकार कर लिया था और सदन के नेता ने भी उसके प्रति अपनी स्वीकृत दे दी थी। लेकिन हमें बहुत दुःख है कि वह समय आने के पूर्व ही वे इस संसार से फोत हो गये। श्री मावलंकर संसदीय परम्पराओं के बड़े हामी थे और यह चाहते थे कि ब्रिटिश पार्लियामेन्ट का अन्धानुकरण न किया जाय, किन्तु भारतीयता की छाप अवश्य रखी जाय। हम, कोई भी परम्परा हो, उसका आंख मीच कर अनुकरण न करें। उनका लोकसभा के अध्यक्ष की हैसियत से जो कार्य रहा है वह आने वाली पीढ़ियां याद करेंगी।

इसी प्रकार आचार्य श्री नरेन्द्रदेव और हमारे बड़े वैज्ञानिक श्री मेघनाद साहा तथा बड़े भारी कानून के ज्ञाता और हमारी सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व मुख्य जज (न्यायाधीश) श्री विजिन कुमार मुखर्जी; इन महापुरुषों का जो स्वर्गवास हुआ है उससे देश में बड़ी भारी क्षति पहुँची है। इन सब में सबसे अधिक जो गुण था वह मानवता का गुण था। किस प्रकार से ये महानुभाव अपने राजनैतिक जीवन में व्यस्त रहते हुए भी सार्वजनिक सेवा में भाग लेते थे और लोगों के सामने एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करते थे, यह उनके जीवन से सीखने वाली चीज है।

मैं आप लोगों की ओर से एक बार फिर इनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करूं और आप लोगों को यह विश्वास दिलाता हूँ कि ये सारी भावनाएं और जो विचार आपने प्रकट किये हैं उनके परिवार तक पहुँचा दिये जायेंगे। अन्त में जो विचार व्यक्त किये गये हैं उनसे अपने आपको सम्मिलित करता हुआ यह प्रार्थना करूंगा कि आप महानुभाव दो मिनिट तक खड़े होकर उन दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

(दो मिनिट तक सदन ने खड़े होकर मौन प्रार्थना की)

So we now adjourn for tomorrow at 8. 30 A. M.

Page No 38

(सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक ७ मार्च, १९५६, के ८-३० बजे प्रातः तक के लिए स्थगित हुई)

विधान सभा भवन,
जयपुर,
दिनांक-६ मार्च, १९५६

मनसाराम पुरोहित
सचिव,
राजस्थान विधान सभा।

परिशिष्ट १

(कृपया प्रश्न संख्या ४ का उत्तर देखिये)

क्रम सं० १	नाम २	योग्यता ३	स्थान जिस पर काम कर रहे हैं। ४	लोन पर लेने का समय ५
१	श्री वी. जी. कनेटकर	आई. पी. डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल आॅफ पुलिस बोम्बे ।	इन्सपेक्टर जनरल आफ पुलिस, राजस्थान, जयपुर ।	दिनांक ३ सितम्बर १९५५ से २ साल के लिये ।
२	श्री के. एन भार्गव	आई. ए. एन्ड ए. एस. डिप्टी अकाउन्टेन्ट जनरल ।	अतिरिक्त सचिव, वित्त विभाग	दिनांक १० जौलाई, ११५५ से १ साल के लिये
३	श्री हंसराज वर्मा	बी. एस सी. (सी. ई.) असिस्टेन्ट इन्जीनियर, उत्तर प्रदेश ।	एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर मेजर प्रोजक्ट, कांकरौली ।	मार्च, १९५३ से तीन साल के लिये ।
४	श्री आनन्दनारायण	बी. एस सी. (सी. ई.) एम.एस सी.(सी. ई.) एम. (ईरीगेशन) (इंगलैंड व यू.एस.ए.) असिस्टेन्ट इन्जीनियर,उत्तर प्रदेश ।	एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर, कैनाल डिविजन, चम्बल, कोटा ।	मार्च, १९५३ से तीन साल के लिये
५.	श्री तेजबहादुर सिंह	सी. ई. असिस्टेन्ट इंजीनियर, उत्तर प्रदेश ।	एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर भादरा डिविजन, भाखरा प्रोजेक्ट ।	जून सन् १९५३ से तीन साल के लिये
६.	श्री के. के. औहरी	ओवर सीयर (रुड़की) ओवर सीयर, उत्तर प्रदेश ।	असिस्टेन्ट इन्जीनियर, चम्बल प्रोजेक्ट, कोटा ।	मई सन् १९५४ से २ वर्ष के लिये ।
७.	श्री एल. एम. साबरवाल	सुबार्डिनेट अकाउन्ट्स सर्विस, असिस्टेन्ट अकाउन्ट्स औफिसर, ए० जी०का दफ्तर ।	अकाउन्ट औफिसर, वित्त विभाग ।	दिनांक १ फरवरी, १९५६ से ६ माह के लिये ।
८.	श्री कैलाश बहादुर माथुर	भूतपूर्व असिस्टेन्ट कमिश्नर, सिविल सप्लाइज ।	डिविजनल सोशियल वैलफेयर औफिसर, बीकानेर ।	रेजीडेन्सी के पुराने कर्मचारी होने के कारण इनकी स्थाई तौर पर नियुक्ति सरकार के विचाराधीन है ।

परिशिष्ट २

(कृपया प्रश्न संख्या ७ का उत्तर देखिये)

प्रस्तावित ८० नवीन आयुर्वेदिक औषधालय ७० ग्रामों की सूची आयुर्वेदिक विभाग, राजस्थान, जयपुर :

क्र० सं०	जिला का नाम	ग्राम का नाम	तहसील	विशेष विवरण
१.	उदयपुर	श्री शिवदेव जी	उदयपुर	
२.	उदयपुर	बायड	उदयपुर	
३.	उदयपुर	मोही	राजसमद	
४.	उदयपुर	अनेडिया	उदयपुर	
५.	उदयपुर	बावन्ड	सराडा	
६.	उदयपुर	बानपुरा	फलासिंया	
७.	उदयपुर	कुन्ड	लसाडिया	
८.	उदयपुर	बरियावद: भवांसर नगर :	बरियावद	
९.	उदयपुर	भमराना	सलूम्बर	
१०.	बांसवाड़ा	पाडवा	बागोदौरा सागवाड़ा:	
११.	बांसवाड़ा	नौगांव	बागीदौरा	
१२.	बांसवाड़ा खास:	नेहरू केन्द्र: बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	
१३.	डूंगरपुर	दामडी	डूंगरपुर	
१४.	डूंगरपुर	चिखली	सागवाड़ा	
१५.	चित्तोड़	महूना	राशमी	
१६.	चित्तोड़	बोहेडा	बड़ी सादड़ी	
१७.	चित्तोड़	पालासर	मेवरोडगढ़	
१८.	चित्तोड़	सेलारपुर	प्रतापगढ़	
१९.	भीलवाड़ा	मुवाडा	भीलवाड़ा	
२०.	भीलवाड़ा	अटून्दा	जहाजपुर	
२१.	भीलवाड़ा	महुवा	मांडलगढ़	
२२.	भीलवाड़ा	दौलदगढ़	भीलवाड़ा	
२३.	भीलवाड़ा	सरदार नगर	बनेड़ा	
२४.	कोटा	मन्डौता	सांनो:	
२५.	कोटा	तलाव		
२६.	कोटा	बागली	पीपलदा	
२७.	बूंदी	जथल		
२८.	बूंदी	सवासा		

क्रम संख्या	जिला का नाम	ग्राम का नाम	तहसील	विशेष विवरण
२६.	बूंदी	बालोद		
३०.	झालावाड़	ताराज	झालावाड़	
३१.	झालावाड़	पवांर	खानपुर	
३२.	बीकानेर	जैतपुर	लूलकर	
३३.	बीकानेर	महाजन		
३४.	बीकानेर	उतराधावास	भादरा	
३५.	बीकानेर	बीकानेर (खास)	बीकानेर	
३६.	चुरू	रामसरावास	राजगढ़	
३७.	चुरू	खालासार	सरदारशहर	
३८.	चुरू	गुसाईसर	डूंगरगढ़	
३६.	चुरू	कालवास		
४०.	भरतपुर	जसुपुरा	घडी	
४१.	भरतपुर	भुसावर (विद्यापीठ)	भरतपुर	
४२.	भरतपुर	पुरापुर छावनी:	धौलपुर	
४३.	भरतपुर	जर्गीना	भरतपुर	
४४.	भरतपुर	डूंसीगां (यूनानी)	पहाड़ी	
४५.	सीकर	रायपुर	नीमका थाना	
४६.	सीकर	दांता	दांता	
४७.	जोधपुर	मांरोट		
४८.	जोधपुर	परबतसर	परबतसर	
४६.	जोधपुर	जीजोट	नांवा	
५०.	जैसलमेर	बिहाना	पोकरन	
५१.	जैसलमेर	बसुन्ड	पोकरन	
५२.	जैसलमेर	रजबयाई	पोकरन	
५३.	जैसलमेर	नावना	नावना	
५४.	नागौर	पंचालसिया	नागौर	
५५.	नागौर	खजवाना	नागौर	
५६.	नागौर	खुनखुना	डीडवाना	
५७.	पाली	रास	जैतारण	
५८.	पाली	बालेंराद	देसूरी	
५६.	पाली	बालना	बाली	
६०.	सिरोही	रेडोर	रेडोर	
६१.	सिरोही	निम्बाज		
६२.	बाड़मेर	अलान्डा		

क्रम संख्या	जिला का नाम	ग्राम का नाम	तहसील	विशेष विवरण
६३.	झुन्झुनू	झाझड़		
६४.	जयपुर	जयपुर (ब्रह्मपुरी)	जयपुर	
६५.	अलवर	अजरका	नौगावां तहसील रामगढ़	
६६.	अलवर	पहाड़ी	बहरोड	
६७.	अलवर	गूंता	बानपुर	
६८.	अलवर	नवाबपुरा	अलवर	
६९.	अलवर	नौगांव	रामगढ़	
७०.	अलवर	परलापुर	अलवर	

(अतारांकित प्रश्नोत्तर जो सदन की मेज पर रखे गये ।)

१. (२ । एम० एल० एम०)श्री सरदारसिंह, एम० एल० ए० (१३७)—क्या स्वायत शासन मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे:—

क. राजस्थान में तहसीलवार कुल कितनी ग्राम व तहसील पंचायतें हैं ?

ख. उनमें से कहां २ की पंचायतों के चुनाव हो चुके हैं और कहां २ बाकी हैं ?

ग. निर्वाचित पंचायतों में से किस २ तहसील की किन २ पंचायतों के चुनाव के विरुद्ध चुनाव याचिकायें तथा रिट आवेदन हुए हैं और वे किस २ न्यायालय में विचाराधीन हैं ?

घ. विचाराधीन याचिकाओं में से प्रत्येक तहसील की किस २ याचिका का निर्णय हो चुका और किस २ का निर्णय अभी होना बाकी है ?

ङ. जिन याचिकाओं या रिट आवेदनों के निर्णय हो चुके उनमें से किन २ का चुनाव दुबारा हो चुका और किन २ का बाकी है ?

च. जिन याचिकाओं के निर्णय हो चुके उनके चुनाव अब तक न होने के क्या कारण हैं ?

(उत्तर अनुपलब्ध)